साधना और सेवा का संगम

वात्सल्य निर्झर

50/-

जून 2026

विक्रम सम्वत् 2083

Rajluxmi Samvid Gurukulam Sainik School

Nalagarh (Himachal Pradesh) | C.B.S.E. Residential Boys School | (Class VI to XII) Science and Commerce

We bring out the winner in you

How We Stand Out ?

- Regular Sanskaram Classes
- Smart Classes and Experienced
- Teachers
- Indoor and Outdoor Games
- Shooting, Swimming, Horse Riding
- Integrated program for NDA,JEE and NEET preparation
- Communication Classes
- AC Hostels
- Pollution Free Environment
- Well Equipped Labs
- Healthy and Vegetarian Food

Contact for Admission

Bariyan, Tehsil : Nalagarh, Dist. : Solan (H.P.) 174101

Call us: 7876004251 & 7876430935, www.samvidgurukulam.com

अपने मुम्बई प्रवास के दौरान महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फड़नवीस के निवास पर उनका आतिथ्य स्वीकार करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी।

साधना और सेवा का संगम

वात्सल्य निर्झर

वर्ष 23, अंक 5, जून 2026

मुख्य संरक्षक

परम पूज्य महामण्डलेश्वर अनन्तश्री विभूषित
युगपुरुष स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज

संरक्षक

परम पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

प्रधान सम्पादक

संजय गुप्ता

प्रकाशक

परमशक्ति पीठ द्वारा संजय गुप्ता

सम्पादकीय मण्डल

देवेन्द्र शुक्ल एवं स्वास्तिका

प्रधान कार्यालय

वात्सल्य प्रकाशन, परमशक्ति पीठ
लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली –110092
दूरभाष : 011 22238751
मोबाईल सम्पर्क : 99588 85858
ई मेल : info@vatsalyagram.org
वेबसाइट : www.vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय

वात्सल्य ग्राम
मथुरा–वृन्दावन मार्ग, पोस्ट–वात्सल्य ग्राम
वृन्दावन (उ.प्र.) 281003

प्रकाशक एवं सम्पादक संजय गुप्ता द्वारा
परमशक्ति पीठ के लिए
हरिओम त्यागी, ए.आर.पैकटेक प्रा.लि.,
आई–23, बेसमेंट, सेक्टर–9, नोएडा, उ.प्र. से मुद्रित एवं
परमशक्ति पीठ,
लव–103, 66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार,
पटपड़गंज, दिल्ली से प्रकाशित

वात्सल्य निर्झर में प्रकाशित लेख एवं रचनाएँ उनके लेखकों के विचारों की अभिव्यक्ति हैं। अतः उनसे सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिए लेखक अथवा रचनाकार ही उत्तरदायी रहेंगे।

त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा

परमशक्ति पीठ

अन्तर्यात्रा

06 सत् हरि भजन जगत सब सपना

08 जंजालों से कैसे छूटें

10 जागृति – भाग 1

12 पूज्य गुरुदेव का 71 वाँ संन्यास जयंती महोत्सव

18 वात्सल्य ग्राम स्थापना दिवस महोत्सव

29 धर्म संस्कृति

30 भक्ति योग वेदान्त साधना शिविर

38 जगन्नाथ पुरी में श्रीमद् भागवत कथा

गोस्वामी श्री तुलसीदास जी कृत

मानस मोती

काम क्रोध मद लोभ सब नाथ नरक के पंथ।
सब परिहरि रघुबीरहि भजहु भजहिं जेहि संत॥

- सुन्दरकाण्ड

हे नाथ! काम, क्रोध, मद और लोभ-ये सब नरक के रास्ते हैं। इन सबको छोड़कर श्रीरामचन्द्रजी को भजिये, जिन्हें सन्त-महापुरुष भजते हैं।

अपनी बात...

– देवेन्द्र शुक्ल

990 वर्षों तक चले हिन्दू समाज के अनवरत् संघर्ष के बाद अन्ततः मध्यप्रदेश के धार में स्थित 'भोजशाला' पर हिन्दू मन्दिर होने की कानूनी मुहर लग गई। 15 मई 2026 को मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय की इन्दौर खण्डपीठ ने निर्णय दिया कि भारतीय पुरातत्व विभाग (ए.एस.आई.) के सर्वे में प्राप्त सभी साक्ष्य इस स्थान पर हिन्दू मंदिर होने के प्रमाण को सिद्ध करते हैं। अतः सम्पूर्ण भोजशाला कॉम्प्लेक्स को देवी सरस्वती का हिन्दू मंदिर घोषित किया जाता है। निर्णय के इसी दिन वहाँ मुसलमानों के द्वारा अंतिम नमाज पढ़ी गई। पुराने न्यायालयीन आदेश के अनुसार यहाँ शुक्रवार को मुस्लिम समाज द्वारा जुमे की नमाज अदा की जाती थी और सप्ताह के शेष छह दिनों में यहाँ हिन्दू समाज को सांकेतिक पूजा का अधिकार प्राप्त था।

भोजशाला के ध्वंस का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। वर्ष 1034 ई. में परमार वंश के शासक राजा भोज ने ज्ञान की साधना और माँ सरस्वती की आराधना के लिए भोजशाला का निर्माण करवाया था जो कि 72 कलाओं और 36 प्रकार के आयुध विज्ञान के ज्ञाता थे। तब यह स्थान नालन्दा और तक्षशिला के समान एक विशाल विश्वविद्यालय था, जिसमें बाणभट्ट, कालिदास, माघ, भवभूति, भास्कर भट्ट, मानतुगाचार्य और धनपाल जैसे विद्वान अध्ययन और अध्यापन किया करते थे। इस भव्य भवन का सभा मण्डप सैकड़ों लाल पत्थर के स्तंभों से बनाया गया था, जिन पर अनेकों देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ उकेरी गई थीं। वर्ष 1035 ई.में वसन्त पंचमी के दिन इसमें माँ वाग्देवी की प्राणप्रतिष्ठा की गई थी। अगली दो शताब्दियों से भी अधिक समय तक भोजशाला विश्व स्तर पर ज्ञान-विज्ञान का केन्द्र रही।

वर्ष 1269 ई. में अरब मूल का एक विधर्मी कमाल मौलाना योजनाबद्ध तरीके से धार में आकर बसा। इसका उद्देश्य था, ज्ञान-विज्ञान के केन्द्र भोजशाला को नष्ट करने का षडयंत्र। वर्ष 1305 ई. में मुगल लुटेरे हमलावर अलाउद्दीन खिलजी ने परमारों के आधीन मालवा राज्य पर हमला कर इस्लामी राज्य की स्थापना की। इस दौरान भोजशाला समेत अनेक ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व के स्थलों को ध्वस्त किया गया। वर्ष 1514 ई. में महमूद शाह खिलजी द्वितीय ने हमला कर भोजशाला को मस्जिद में बदलने की कोशिश की।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे वेदवाक्य को अपने भीतर जीने वाले सनातन समाज ने सदैव ही सबके कल्याण की कामना की है। कभी उसने आततायी शक्तियों के खात्मे के लिए अपने शरीर की अस्थियाँ दान कर 'दधीचि परम्परा' की अलख जगाये रखी तो कभी किसी पक्षी की प्राण रक्षा करने के लिए उसके मांस के बराबर अपने शरीर का हिस्सा काटकर बहेलिए को दिया। भोजशाला का ज्ञान सारे विश्व के लिए था। जो चाहे, सो उसमें आकर विद्याध्ययन कर सकता था परन्तु मूलतः ज्ञान-विज्ञान के विरोधी विधर्मियों ने कभी हमारी विश्व बंधुत्व की भावना को स्वीकार नहीं किया। उनकी नजर में हम हमेशा 'काफिर' ही रहे, जिसे कत्ल करने पर जन्नत नसीब होती है। उन्हें हमेशा पढ़ाया गया कि 'बुतपरस्ती' कुफ्र है। वो इसे नहीं मानें, यहाँ तक भी ठीक है परन्तु हजारों मील दूर से आकर हमारे आस्था केन्द्रों पर हमले करके उन्हें नष्ट करना सिवाय घृणा और द्वेष के और भला क्या हो सकता है।

एक हजार वर्षों तक सनातनी समाज क्यों लुटता-पिटता रहा, सर्वशक्तिमान होने के बावजूद और क्यों बर्बर इस्लामिक लुटेरे हजारों मील दूर से आकर हमारे मानबिंदुओं को रौंदने में सफल रहे, अब हमें अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए। वरना हमें रौंदने की तैयारी तो चल ही रही है फिर से।

हमारे ही देश में हमारे आस्थाकेन्द्रों को कोई लुटेर रौंद डाले और फिर उसे हमारे ही शासन में फिर से प्राप्त करने में शताब्दियों का समय लग जाए, इसका एकमेव कारण है-सनातनी समाज में बिखराव। हमें समझना होगा कि किसी भी शासन व्यवस्था में बिना एकजुटता के हम स्वधर्म को सुरक्षित नहीं रख सकते। यदि एक हजार वर्ष पहले देश की सभी रियासतें एकजुटता के साथ पश्चिमी भारत पर एकत्रित हो गई होतीं तो एक भी विधर्मी अखण्ड भारत की सीमा पर पैर नहीं रख सकता था। फिर सात दशकों का समय तो हमें अपनी ही शासन व्यवस्था में लगा, अपने आस्थाकेन्द्रों को पाने के लिए। पहले अयोध्या की श्रीराम जन्मभूमि और अब धार की भोजशाला हमें इसीलिए प्राप्त हो सकी है कि हमने हिन्दू हित की बातें करने वालों को चुना है। केवल इतना ही समझना पर्याप्त है कि अब इन्हें टिकाए रखिये अन्यथा सीमा पर गुर्राते शत्रु को फिर से भीतर आने में बहुत समय नहीं लगेगा। हिन्दू समाज की एकजुटता ही सनातन की सुरक्षा गारंटी है।

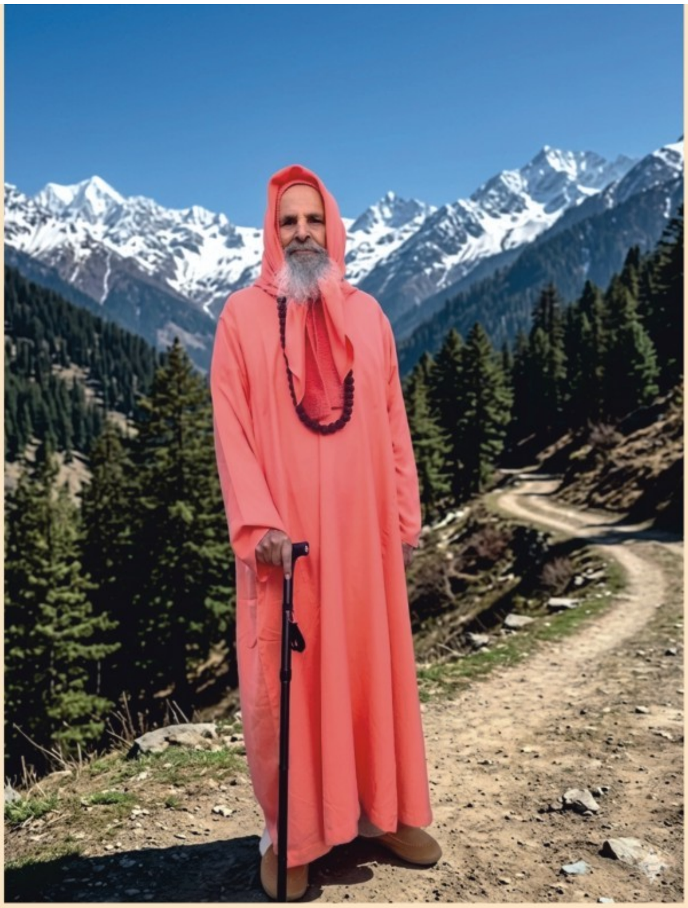

सत् हरि भजन जगत सब सपना

– युगपुरुष स्वामी परमानन्द जी महाराज

हम खाने का काम मुख से लेते हैं। सिर दर्द की दवा हो, पेट दर्द की दवा हो, पीठ की दवा हो, चाहे बुखार की दवा हो; सबको खाने के लिए मात्र एक मुख ही है। इसी प्रकार चाहे धन का सुख हो, चाहे पद का सुख हो, चाहे अन्य कोई सुख हो; सुख हम सारे मन से लेते हैं। दुःख चाहे अपमान का हो, दुःख चाहे निर्धनता का हो, दुःख चाहे किसी पड़ोसी के गलत व्यवहार का हो, दुःख भी केवल मन को ही होता है। इसीलिए अपने मन की तरंगे मार लो, बस हो गया भजन।

और कुछ नहीं सुधारना। समस्या तो है केवल आपका मन। समाधान भी है मन। यह आपका पागलपन है जो आप और कुछ सुधारने में लगे हो। भ्रम है आपका कि दुनिया सुधर जाएगी, तन सुधर जाएगा, फलाना सुधर जाएगा। यदि और कुछ सुधर जाएगा तो और के सुधारने से उस परिस्थिति के कारण थोड़ी देर मन ठीक रहेगा। फिर मन को ठीक करने की जरूरत नहीं है। यदि तन के रहने से ही तुम जिंदा रहते हो, तो फिर तन को ही रखना पड़ेगा तन नहीं रहेगा तो मरोगे और यदि बिना तन के आप रहते हो, यह पता चल जाएगा तो फिर आप नहीं मरोगे। यदि मन ही सुख का साधन है तो हमें पदार्थ की क्या जरूरत है? हम क्यों चाहते हैं कि तुम हमें मान दो, तुम हमें प्यार दो। अभी तुम्हारा मन कुछ पाकर खुश होता है। खुश तो मन ही होता है यदि मन को खुश रखना जान जाओ तो किसी के प्यार की क्या जरूरत है। फिर किसी के सम्मान की क्या जरूरत है। अभी हमारा मन कुछ पाकर खुश होता है और कुछ ना पाकर दुखी होता है। कुछ पाकर दुखी भी होता है और कुछ पाकर सुखी भी। वो कुछ लोगों से मिलकर दुखी होता है और उनके बिना सुखी होता है। क्या आपके जीवन में एक सेकंड कभी आया, जब बिना किसी और के आप सुखी हुए हो? तुम्हारे ख्याल में भी और ना हो और तुम खुश हो, यह एक अनुभव तुम्हें मुक्त कर देगा। एक अनुभव, एक प्रयोग जिसमें तुम्हारा किसी और से लेना देना नहीं है, मन से ही सुखी हो। लोग कभी भी नहीं मानते कि हम मन के कारण दुखी हैं। हमेशा यह मानते हैं कि पत्नी के कारण दुखी हैं या पति के कारण। क्या आपने कभी यह अनुभव किया कि मन के ही कारण दुखी हैं? तुमने जब भी दुःख का अनुभव किया होगा किसी अन्य को निमित्त माना और जब भी मरे हो, देह को ही 'मैं' माना है।

मरते हो देह को 'मैं' मानकर, दुखी होते हो मन को 'मैं मानकर और मन सुखी या दुखी होता है किसी और को अपना बनाकर। ध्यान रखना कि जब भी मन दुखी हुआ होगा, किसी और के कारण या सुखी हुआ होगा, किसी और के कारण। आपको यह समझ ही नहीं आया कि मन स्वयं दुखी या सुखी होता है। नासमझी है, किसी और का बहाना। जैसे एक औरत रो रही थी क्योंकि घर में उसे पति ने थोड़ा डाँट दिया। पूछने पर वो कहती है कि भले ही उन्होंने मुझे डाँटा लेकिन मैं तो पहले से ही रुँआसी थी। बस रोने का थोड़ा बहाना मिल गया।

आप भी तो दुखी होने को तैयार ही बैठे हो, लड़ने को, क्रोध करने को तैयार ही बैठे हो। पहले से तैयार रहते हो कि तुमने कुछ कहा और लड़ाई शुरू। परन्तु इसके विपरीत क्या आपकी यह भी तैयारी है कि तुम कुछ भी कहते रहो, हम दुखी नहीं होंगे। आपकी ऐसी कोई तैयारी है? कभी सोचा ही नहीं कि कोई देना भी चाहे हम नहीं लेंगे। भगवान भी मारे, पर हम नहीं मरेंगे। ख्याल रखना कि समय तुम्हें नहीं मार सकता। समय केवल शरीर को मारता है। वह अपना काम करता है जैसे हमारी आँखें देखने का काम करती हैं। स्पर्श की अनुभूति आँखें नहीं कर सकतीं। कान सुनने काम करते हैं, वो हाथों की तरह किसी चीज को पकड़ नहीं सकते। तो जिसका जो काम है, वही करेगा। जैसे तुम हवा को देख नहीं सकते पेड़ का हिलना देखते हो। हवा चलती है तो तुमको छूती है। क्या तुम हवा को छूते हो? क्या तुम हवा को देखते हो? क्या तुम फूलों की सुगंध को देख

सकते हो? नहीं। तो ऐसे ही जो जिसका विषय है, वो वही काम करेगा।

काल का विषय है मारना लेकिन किसको? ब्रह्म को, आत्मा को मारने का काम काल करता है? तो जब काल का विषय ही नहीं है आत्मा, तो काल आत्मा को कैसे मारेगा? फिर तुम क्यों मरते हो? क्योंकि तुम अभी अपने शरीर को ही आत्मा मानते हो। शरीर को ही 'मैं' समझते हो। इसलिए गलती तुम्हारी कि तुम शरीर हो गए और कहते हो कि काल हमारा दुश्मन है। काल तो अपना काम करता है और अपना काम रहते कोई उसे बंद नहीं करेगा। शरीर रहते अपना स्वभाव नहीं छोड़ेगा, आँखें अपना स्वभाव नहीं छोड़ेगी, ये सब अपने रहते काम करेंगे। जिसका जो काम है, वही करेगा। तो काल का काम है मारने का। किसके मारने का? काल का काम है कि वो कुछ-न-कुछ बदलता रहता है। आपके शरीर को किसने बदला? वो काम में लगा पड़ा है, तुम्हें खबर हो या ना हो। कभी-कभी ध्यान आता है कि बूढ़े हो जाएंगे, मर जाएंगे। हम लोग भी यही सुनाते हैं पहले कि तुम मर जाओगे, एक दिन यहाँ तुम्हारा कुछ नहीं रहेगा।

जो तुम समझ सकते हो, पहले हम वही समझाते हैं या लगभग-लगभग जो तुम समझे ही हुए हो, उसी पिसे हुए को फिर से पीसते हैं। तुम मरने वाले हो, ये तुम जानते हो कि हमें जनाना है? बोलो। हाँ, तो जो जानते हो, वहीं से हम कथा शुरू करते हैं। कहीं तुम हमें बुद्धू ना समझ लो क्योंकि यदि तुम्हारी समझ के विपरीत बोलेंगे तो पहले दिन से ही हम मूर्ख सिद्ध हो जाएंगे। तुम कहोगे कि इनको आता ही कुछ नहीं। तो हमको आता है, कुछ हम कुछ जानते हैं, तभी तुम्हारी मोहर लगेगी कि 'हाँ स्वामीजी जानते हैं।' जो तुम जानते हो, वही हम कहें। बात समझ में आई? जब तुमको यह पक्का हो जाएगा कि स्वामीजी जानकार हैं, तो धीरे-धीरे वो जनाएंगे जिसे तुम कम जानते हो। फिर वो जनाएंगे जिसको तुम बिल्कुल नहीं जानते हो।

इसीलिए हर ग्रंथ शुरू यहीं से करता है कि एक दिन तुम यहाँ नहीं रहोगे, यहीं सब छूट जाएगा, कुछ भी साथ नहीं ले जा सकोगे। यही कथा शुरू में अच्छी लगती है, सत्य लगती है। तुम नहीं मरोगे, यदि यह सत्य लगता होता तो फिर हमारी क्या जरूरत थी। तुम्हें लगता होता हम मुक्त हैं तो फिर हमारी कथा की क्या जरूरत थी। तुम्हें लगता है कि हम दुखी हैं, परेशान हैं, हममें इतनी कमियाँ हैं, हम पापी हैं यदि यह आपको लगता है तो जो आपको लगता है वही पहले पंडित दोहराते हैं। यदि वो ये बातें ना कहे तो पहले दिन से ही उनका और तुम्हारा संबंध खत्म हो जाए। जब ब्याह होता है तो शुरू दिन तो कम-से-कम सब ठीक ही रहता है। फिर यदि छह महीने बाद तलाक हो तो हो, पर रिश्ता भी किया तो कुछ तो अच्छा लगा ही होगा। नहीं तो रिश्ता ही शुरू नहीं हुआ होता।

पहले ही दिन वो अंधी, काणी या बहरी होती तो आप ब्याह करते? पहले ही दिन यदि वो शराब में धुत्त होकर गाली देता तो आप ब्याह कर लेतीं, ऐसे महान आदमी से? इसलिए बदसूरत भी जब शादी करते हैं मेकअप करके कि कम-से-कम धोखा तो खाए। क्योंकि फर्स्ट इंप्रेशन इज लास्ट इंप्रेशन। तो ऐसे ही हम भी पहले 'इंप्रेशन' डालेंगे ताकि तुम्हें लगे कि 'हाँ स्वामीजी तो सब जानते हैं।' इसीलिए एक ज्योतिषी कहाँ से ज्योतिष शुरू करता है? वो कहता है कि इंदिरा गांधी को हमने यह बताया था। अरे तू हमें बता, इंदिरा गांधी जाने दे भाड़ में। परन्तु वो कहेगा हमने जवाहरलाल को यह कहा था, हमने यह भविष्यवाणी की थी। पहले वह हमको प्रभावित करता है। तो हम भी ज्ञानी हैं, पहले तुमको प्रभावित करेंगे। कम-से-कम वो बातें करेंगे जिससे तुम बिलकुल सहमत हो जाओ। हमारी बात से तुमको अच्छा लगे।

तुम जगते सोते हो हम भी तो यही रोज सुनाते हैं। जगते सोते हुए यही जनाने के लिए कथा हम कर रहे हैं। शुरू वहीं से करते हैं कि तुम जगते हो फिर यह होता है। तुम स्वप्न देखते हो फिर जग जाते हो, फिर स्वप्न झूठा होता है, फिर नींद चली जाती है। क्या हमने कथा की? बोलो कोई नई कही? नहीं। तुम जगते हो, सोते हो, जवान होते हो, बूढ़े होते हो, दुखी होते हो, सुखी होते हो, तुम घर वालों से परेशान होते हो; यह बात सच शत प्रतिशत सत्य है कि नहीं देखो। तो पास हो गए ना हम। इतनी अच्छी कथा की कि तुमने इंकार नहीं किया। स्वीकार करने वाली बात अब एक और है जिसको तुम मुश्किल में स्वीकार करोगे कि यह सब झूठ है, तुम ही अकेले सच हो। यह सब झूठ है। रामायण की चौपाई है

देखिए सुनिए गुनिए मन माही। मोह मूल परमारथ नाही।।

अर्थात् जो देखने, सुनने में आता है, मन-बुद्धि की पकड़ में आता है वो मोह मूल है, कोई सार नहीं है।

सचमुच नहीं है। तुम लोग समझते होगे कि परमार्थ है दान देना। बड़े परमार्थ के काम में लगे। मूर्ख आदमी यह परमार्थ है? इसका नाम परमार्थ है? जो भी कर रहे हो यह सब यह लौकिक है। पाप और पुण्य, भजन और पूजा और पाठ जो देखते सुनते अनुभव करते हो, यह सबका सब अज्ञान मूलक है, माया मूलक है, अविद्या मूलक है। यह परमार्थ नहीं है। अपना अनुभव बताते हुए शंकर भगवान भी पार्वती जी से कहते हैं कि

उमा कहौं मैं अनुभव अपना।

सत हरि भजन जगत सब सपना।।

तो हरि का स्मरण ही परमार्थ है और बाकी जगत सब सपना है। इसीलिए यदि लड़ो तो सपना, प्रेम करो तो सपना, दान दो तो सपना। जब स्वप्न में मारपीट हुई तो नकली और शादी हुई तो असली? जब जागे तो दोनों ही नकली। जब सपना नकली ही है तो फिर दान-पुण्य कैसे असली हो गए? असल में संसार में जो तुम कर रहे हो, देख रहे हो सब सपने की ही बात है। इसीलिए बहुत कुछ पुण्य कर लेने वाले कोई ठिकाने नहीं लगे। सिर्फ एक राहत है कि हमने पुण्य किया है।

www-youtube-com/watch\v=LfirnNc2KAw से साभार

जंजालों से कैसे छूटें

-दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

सन्त-महापुरुष कहते हैं कि दुनिया भर के पाप तीर्थों पर जाकर कट जाते हैं परन्तु तीर्थ में किया गया पाप कहाँ कटेगा! पुण्य करने गए तीर्थ में और सौ पाप कमा लाए। इसीलिए यह पुण्य और पाप का विषय नहीं है। भागवती कथा का मिलना, परमात्मा की अहेतुकी करुणा के कारण ही है। उसे निष्काम भाव से सुनो। स्वर्ग में क्या है? देवता स्वर्ग में क्या करते हैं? अपने पुण्यों की अर्जित की हुई पूँजी को खर्च करते हैं। स्वर्ग भोग भूमि है। जहाँ पुण्य व्यय हो जाते हैं, खर्च हो जाते हैं। भागवत की कथा सुनना भारत की धरती पर जन्म लेकर, यह तो दुर्लभ अवसर आया है संयुक्त हो जाने का। परमात्मा के चरणों में आबद्ध हो जाने का अवसर है यह। योग तो बहुत सुना है आपने। संयोग भी सुना होगा ना या संयुक्त होना, युक्त होना। परन्तु परमात्मा के चरणों में तो हमें अवियुक्त हो जाना है। उनके चरणों को बाँध लेना है, जैसे मैया यशोदा ने कान्हा को ऊखल में रस्सी से बाँध दिया था। मेरा कान्हा, मेरे हृदय के अंदर, मेरे प्रेम के पाश में बँध जाए; यह उद्योग करना है। इसीलिए प्रभु की कथा में बैठकर इच्छा नहीं करना, चाह नहीं रखना।

शौनकादि ऋषियों ने सूतजी से प्रश्न किया और प्रश्न सुनकर सूत जी बहुत प्रसन्न हो गए। ऋषियों ने कहा है कि सूतजी, हम इधर-उधर की बात नहीं सुनना चाहते। हमें तो आप कुछ ऐसा सुनाएँ, जिसको सुनने और आत्मसात करने के बाद जन्म-जन्मांतरों के क्लेश कट जाएँ। दुःख, क्लेश, प्रमाद, विषाद और चिंताओं से घिरे समाज को, विश्व को मार्ग मिले, कुछ ऐसा सुनाइए। देवताओं को यह अवसर मिला नहीं।

श्रीमद् भागवत की शरण में आकर संसार के पदों और प्रतिष्ठाओं की आकांक्षा तो छोड़िए, स्वर्ग तक की इच्छा भी अपने मन में मत लाइए। क्योंकि जहाँ इच्छा और चाह है, वहीं चिंता है। आपने लोहे की चिंता छोड़कर, सोने की इच्छा प्रारंभ कर दी। एक पक्षी है लोहे के पिंजरे में। आपने बड़ा पुरुषार्थ किया। उसका परिवर्तन कर दिया। आपने उसे लोहे के पिंजरे से निकाल कर सोने के पिंजरे में बंद कर दिया। उस पक्षी के लिए तो सोने का पिंजरा भी बंधन ही है।

इसी प्रकार बंधन चाहे संसार का हो अथवा स्वर्ग की कामना का, है तो वह बंधन ही। सन्त-महापुरुष आपको निष्काम बना देना चाहते हैं। तो क्या मांगोगे भगवान से?

इश्क एक तरफा में यूँ मसरूफ हो जाऊंगा मैं
राम तुम होगे शमा, काफूर हो जाऊंगा मैं
मैं तुम्हें चाहूँ तो चाहूँ, तुम ना मुझको चाहना
तुमने गर चाहा मुझे, मगरूर हो जाऊँगा मैं।
मैं तुम्हें देखूँ तो देखूँ, तुम ना मुझको देखना
तूने अगर देखा मुझे, मशहूर हो जाऊँगा मैं।
मैं अगर मांगूँ कभी तो, कुछ ना देना तुम मुझे
वरना फिर प्रेमी नहीं, मजदूर हो जाऊँगा मैं।

तो हम माँग कर मजदूर नहीं बनना चाहते। भगवान के चरणों में बैठो तो निष्काम भाव से। क्या चाहोगे? क्या माँगोगे? हे प्रभु, जिस मन से इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं, वह मन समाप्त हो जाए। इच्छा मात्र समाप्त हो जाए। प्रहलाद ने भी तो भगवान से यही माँगा था कि मुझे यह वर दीजिए कि मैं कभी आपके समक्ष कोई इच्छा ही ना करूँ। ऐसा चित्त! और हमारी तो लंबी लिस्ट है। तुमने यह दिया, वह नहीं दिया। पत्नी तो अच्छी है, सुंदर है, परन्तु कमबख़्त स्वभाव की ऐसी कसैली कि चैन से साँस भी नहीं ले पाता। सत्संग सुनने आई एक मैया। सभी उठकर चल दिए लेकिन मैया वहीं बैठी। महात्मा ने पूछा -'माँ, क्या बात है? कुछ प्रश्न है? कुछ जिज्ञासा है? कोई शंका है क्या?' महात्मा ने सोचा अब पूछेगी कि भगवान की भक्ति कैसे मिले? ब्रह्म सत्य क्या है? जगत मिथ्या क्या है? जीव और ब्रह्म में एकत्व क्या है? इस माया और अविद्या से छुटकारा कैसे होगा? भक्ति के भाव में कैसे डूबूँ? कैसे परमात्मा की करुणा मिले? वो बोली नहीं -'महात्मा जी, मैं तो बैठी थी कि सारी दुनिया चली जाए मैं अपनी बात कहूँ। तो मेरी बात तो यही कि मेरे घर में एक सुन्दर और सुशील बहू आ जाये तो मेरा बेड़ा पार हो जाए।' महात्मा जी ने हँस कर कहा -'अरे क्या कह रही हो माँ? हमसे माँग रही हो बहू! हम तो बहू-बेटों से छुटकारे का उपाय बताते हैं। यह काम ब्रह्माजी का है। वे ही गुड्डे गुड़ियों की सप्लाई करते हैं। तो उन्हीं के पास जाओ।' वो बोली -'तो फिर आप ही कोई तरीका बता दो, जिससे मैं ब्रह्माजी को खुश कर सकूँ।' महात्मा जी ने बता दिया कि ब्रह्माजी के मंदिर में जाकर कहना 'जय वे ब्रह्मा तू ही तू, दे दे ऊँची लंबी नूँ।' अब उस माता ने यही रट लगा ली। सुबह-सुबह कटोरी में आटा डाल कर और लोटे में पानी भर कर भागी जा रही है। ब्रह्माजी से दिन रात मांगती है 'जय वे ब्रह्मा तू ही तू, दे दे ऊँची लंबी नूँ।'

कुछ समय के बाद उसे बड़ी सुन्दर बहू मिली। चाँद का टुकड़ा घर में उतर आया। बार-बार मनाती है कि कहीं दुनिया नजर ना लगा दे मेरी बहू को। मन में सोचती है कि चेहरे की तो अच्छी है, दिल की भी अच्छी निकले तब तो बात बने। भगवान को मनाती है। दो-चार हफ्ते तो पता ही नहीं चला कि बहू का स्वभाव कैसा है क्योंकि पहले दो हफ्ते हनीमून में कटे। लौट कर जब बहू आई तो दो हफ्ते थकावट उतारने में निकले। पहले तो बेटे की बेड टी बेडरूम में पहुँचाती थी मां। अब बहू रानी का भी चाय का प्याला वहीं पहुँचाना पड़ा। उसके भी कपड़े धो रही है। और वह कमबख़्त ऐसी कि मुस्कुरा कर कभी सास की तरफ देखे ही ना।

इधर बुढ़ापा तरस रहा है और उधर जवानी अपने गुरूर में है। बड़ी दुखी हो गई। साल भर में तो बुढ़िया ऐसी हो गई जैसे कब्र से दाब के निकाली गई हो। गाल पिचक गए, पेट पीठ पर लग गया, चेहरे की रौनक गायब हो गई। बड़ी दुखी है, बड़ी उदास है। महात्मा जी अगले साल फिर आए। बोले -'माँ, क्या बात है? बेटे की शादी हो गई? हमें लड्डू नहीं खिलाओगी?' बोली -'महाराज क्या बताऊँ? मेरा तो नाक में दम है। इस दुष्ट बहू से पीछा नहीं छूटता। लगता है कि मैं तो चैन से मर भी नहीं सकूंगी। इससे छुटकारा दिलाओ। मेरा बुढ़ापा खराब हो गया।' महात्मा ने कहा -'माताजी, मैंने तो नहीं दी थी बहू। जिनसे लाई थीं, उन्हीं के मत्थे मार के आओ।' वो बोली -'अब ब्रह्माजी के पास जाकर मैं उनसे क्या कहूँ?' महात्मा ने एक मंत्र और बता दिया कि अब जाकर कहना 'जय वे ब्रह्मा जय, जीवे जित्ती तिमे ले।' जैसे दी थी महाराज वैसे ही छुटकारा दिलाओ।

तो संसार तो ऐसा ही है ना? सासें कितनी खुश हो रही हैं कि हाँ, बहू ऐसी ही होती है। लेकिन कभी-कभी बहुओं को भी ऐसी सासें मिल जाती हैं, जो उनकी साँस लेना ही बंद कर देती हैं। सासू माँ डंडा लिए द्वार पर बैठी रहती है, रोब झाड़ने के लिए। हमने कहा विश्व हिन्दू परिषद का महिला विभाग का काम है माताओं। साठ वर्ष की हो गई हो। तुम भी जरा कार्य करो उसमें। बोलीं, हम क्या करेंगी? हमने कहा कि पापड, बड़ी बनानी आती है? तो अपने पास के मठ-मंदिर में जाकर गरीब बहनों को बच्चों को पापड़ और बड़ी बनाना सिखाओ, सिलाई करना सिखाओ, कढ़ाई करना सिखाओ। यह सब नहीं आता तो हफ्ते के हफ्ते सत्संग किया करो। दुनिया भोग विलास में है। तुम जब राम नाम के गीत गाओगी तो कोई ना कोई इस रंग में, इस रस में डूब ही जाएगा। वो बोलीं आप कहती तो ठीक हो साध्वीजी। बस, बहू आ जाए घर में, फिर मैं महिला विभाग का काम करूंगी।

मैंने उन माता से कहा कि -'माता, ऐसा है कि यह जो तुम आशा लगाए बैठी हो तो मैंने देखा है कि बेटे की शादी होने के बाद अधिकांश माताओं की प्रसन्नता गायब हो जाती है। क्योंकि पहले तो घर में ताला लगा कर आ भी जाती थीं। अब बहू रानी है उस पर भरोसा किया भी नहीं जा सकता। इसीलिए सासूजी का दिल नहीं करता, बहू को अकेले छोड़ने का, अपनी मालकियत छोड़ने का।' वो बोलीं कि -'हाँ, आप सही कहती हैं। कोई दुष्ट ग्रह पीछे पड़ गया लगता है। अब कैसे इससे छुटकारा पाएँ?' मैंने कहा कि -'अपने बेटे के विवाह पर दहेज में कितना क्विंटल लोहा लिया है? इसी से आपके घर में क्लेश आया है। बहू आई तो फ्रिज लेकर आई। फ्रिज में लोहा। गोदरेज की अलमारी में लोहा। कूलर में लोहा। पेटी में लोहा। ट्रंक में लोहा। लोहा ही लोहा। इतने क्विंटल लोहा आया है तो बहू रानी के साथ अशांति भी आएगी, ग्रह भी आएंगे, क्लेश भी आएंगे।' वो बोलीं कि -'अब इससे शांति का इसका उपाय बताओ साध्वी जी।' मैंने कहा -'अब तो इसका एक उपाय है कि अपनी कमर में लटकी यह लोहे की चाबी निकालकर बहू रानी के हाथ में दान कर दो। इस दान से लोहे की सारी गर्मी शांत हो जाएगी। अर्थात् अपनी 'मालकियत' उसको दे दो।

हम चीजों को जितना पकड़ते हैं, जीवन उतना ही असंतोष से भरता जाता है। जब आप वस्तु या व्यक्तियों के मोह को छोड़ना शुरू करेंगे, तब आप हल्के हो जाएंगे। सुखी जीवन का यही एक तरीका है।

जागृति

भाग-1

- भानुप्रताप शुक्ल

(यह लेख मई, 1994 को लिखा गया है)

अश्लीलता की समस्या बहुआयामी है। इसके मूल में पाश्चात्य जीवन शैली का अंधानुकरण तो है ही, प्रचार माध्यमों द्वारा सस्ते मनोरंजन को उभारना भी अश्लीलता की वृद्धि में बहुत बड़ा कारण है। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में भोंडे विज्ञापनों से निम्नस्तरीय उपभोक्तावाद को बेतहाशा उभारा जाता है। दूरदर्शन तथा तेजी से प्रवेश कर रहे सेटेलाइट चैनलों के अनर्बन्ध स्वेच्छाचार पर यदि समय रहते अंकुश नहीं लगाया गया तो समूची युवा पीढ़ी पश्चिमी तौर तरीकों की गुलाम होकर बर्बाद हो जाएगी। यौन विकृतियां, हिंसा, स्वेच्छाचार, देह-व्यापार और कुण्ठा के कारण बलात्कार, आत्महत्या तथा भीषण बीमारियों का प्रकोप फैलता जा रहा है। महिलाओं को उपभोग संसाधन मानने की अभारतीय मनोवृत्ति का शिकंजा कसता जा रहा है। कला, संस्कृति, नृत्य, गायन आदि श्रेष्ठ मानव निर्माणकारी गुणों की प्रेरणा का तेजी से ह्रास हो रहा है। भारतीय संस्कृति पर यह भयंकर आक्रमण है। इसका प्रतिरोध, परिवार, समाज, सरकार तथा जन कल्याणकारी स्वयंसेवी संस्थाओं आदि सभी मोर्चे पर होना नितान्त जरूरी है।

खेद की बात है कि हिन्दू समाज का समर्थ वर्ग आज भी शिक्षा, सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक सम्पन्नता, और विशेष प्रभुत्व निर्माण करने की स्थितियों आदि के मामले में अभिजात्य भावना से ग्रस्त है। इस वर्ग को यह तथ्य समझने और स्वीकार करने का साहस करना होगा कि समाज के उन पिछड़े और वंचित वर्गों के साथ, जिन्हें आज अनुसूचित जाति, जनजाति और दलित नाम से पुकारा जाता है, कारण जो भी रहें हों, अन्याय हुआ है। इन समस्त वर्गों को अपने राष्ट्रीय समाज के साथ समरस बनाना अतीव आवश्यक है। समरसता का निर्माण करने के लिए लोगों की मानसिकता में परिवर्तन करना होगा। जाति-पाति के बन्धन तोड़ने होंगे। ऊँचनीच और भेदभाव को तिलांजलि देनी होगी। यह तथ्य भलीभांति समझ लें कि यदि हिन्दू समाज के इस कमजोर हिस्से को इसी प्रकार उपेक्षित और वंचित बने रहने दिया गया तो सम्पूर्ण समाज निःसत्व बना रहेगा और हिन्दू समाज को तोड़ने के विदेशी मंसूबों को खाद-पानी मिलता रहेगा। देश की आजादी खतरे में पड़ जाएगी और प्रगति रुक जाएगी।

दहेज की मांग करने वालों का बहिष्कार करें तथा स्वयं भी यह संकल्प लें कि अपने बेटों के विवाह में दहेज की मांग नहीं करेंगे। युवतियों में आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास जगे। उनमें इतना साहस उत्पन्न करना होगा कि दहेज की मांग करने वाले विवाहों से वे स्पष्ट इंकार कर सकें, इस दृष्टि से माता-पिता को अपनी कन्याओं की शिक्षा के लिए सभी आवश्यक प्रबंध करना होगा। ऐसा वातावरण बनाना आवश्यक है कि दहेज उत्पीड़न की शिकार बहनों को त्वरित न्याय मिले, दहेज विरोधी सभी कानूनों का कड़ाई के साथ पालन हो तथा पुलिस और न्याय-व्यवस्था इस दिशा में सतर्कतापूर्वक सक्रिय बनी रहे।

भ्रूण परीक्षण और कन्याओं को गर्भ से गिराकर नष्ट करना सम्पूर्ण महिला जगत का घोर अपमान है। यह एक ऐसा नारकीय पाप-कर्म है, जिसके कारण इहलोक ओर परलोक से भ्रष्ट होकर समाज सम्पूर्ण विनाश के गड्ढे की ओर अग्रसर हो रहा है। यह नैतिक पतन की पराकाष्ठा है कि नारी को 'भोग्या' का रूप दिया जा रहा है। मानों वह एक ऐसा कारखाना है जिससे वासना की पूर्ति की जाती है और नितांत सांसारिक उपभोग की सामग्री प्राप्त की जाती है। मातृत्व का इससे बड़ा निरादर क्या होगा कि सन्तान के प्रति उसका कोई ममत्व ही शेष न रहे। यह हिन्दू समाज की जनसंख्या घटाने की साजिश तो है ही, साथ ही परिवार नियोजन के नाम पर महिलाओं के शील, सतीत्व, लज्जा, सदाचरण और सच्चरित्रता को निगल

जाने का षडयंत्र भी है।

जब-जब देश पर विपत्ति आई, दैवी शक्तियाँ आसुरी शक्ति से हारी, तब-तब शक्ति स्वरूपा नारी ने विभिन्न रूपों में प्रकट होकर राष्ट्र, धर्म, संस्कृति और परम्पराओं की रक्षा की। वेदकालीन नारी, प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष की सहभागिनी थी। गृहस्थ धर्म से जुड़े अनुष्ठान, यज्ञ-कर्म आदि तो वह करती ही थी, राजनीति में मंत्रणा करना, युद्ध-भूमि में जाना और ज्ञान-चर्चाओं एवं सभा सत्रों में भाग लेकर समाज के चारित्रिक उत्थान की भी वह चिन्ता करती थी।

भारत की नारी हमेशा पूज्या मानी गई। मनुज जाति की जननी 'माँ' के रूप में उसे सदैव ऊँचा स्थान मिला। किन्तु जब मध्यकाल में मुगलों का शासन आया और विदेशी आक्रन्ताओं के अत्याचार होने लगे तो बाल विवाह, पर्दा प्रथा आदि कुरीतियाँ जड़ पकड़ती गईं। नारी शिक्षा से वंचित हो गई। सती के नाम पर विधवाओं को जलाया जाने लगा। यह सब देखकर पिछली सदी में राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द सरस्वती, महर्षि अण्णा साहब कर्वे आदि महापुरुषों ने नारी उत्थान की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया। बंगाल में भगिनी निवेदिता ने तथा महाराष्ट्र में सावित्री बाई फुले ने स्त्री शिक्षा की ज्योति जलाई। भारत के स्वाधीनता संग्राम में गाँधी जी के नेतृत्व में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। घर-घर चर्खा चला।

विदेशी वस्त्रों की होली जली, शराब की दुकानों पर 'पिकेटिंग' हुई। इन सब कामों में नारी अग्रणी रही। स्वाधीनता के बाद भी 62, 65 और 71 के युद्धों में देश भर में विभिन्न सीमान्त मोर्चों पर जाते अपने जवान भाइयों की आरती उतारती, मिठाई खिलाती बहनें, देश भर के स्टेशनों पर दिखाई देतीं थीं।

आजादी के बाद पछुआ हवा तेजी से चलने लगी। उसके प्रभाव से विश्व को दिशा दिखाने वाली हिन्दू नारी स्वयं ही दिशाहीन होकर भटकने लगी है। नारी देह विज्ञापन और प्रदर्शन की वस्तु हो गई है। तरह-तरह के फैशन परेड, नारी की गरिमा से मनमाना खिलवाड़ कर रहे हैं। सीता और सावित्री के पावन सतीत्व की गाथाएँ जिस देश में प्रचलित हैं वहीं 'परमिसिव सोसाइटी' (अनुदेशात्मक) समाज की भोंडी बातें होने लगी हैं। स्वच्छंदता का निर्लज्जतापूर्वक समर्थन किया जा रहा है।

नारी कभी भारतीय परिवार की नींव थी। वह हर घर को स्वर्ग बनाती थी आज बढ़ते हुये तलाक और पारिवार का विघटन चिन्ताजनक है। देश की भावी पीढ़ी को संस्कार कौन देगा? यह बड़ी भारी समस्या है। श्रमिक वर्ग की महिलाओं की असुरक्षा और दुर्दशा तो अवर्णनीय है। हाल ही में उत्तर प्रदेश में दलित वर्ग की दो महिलाओं को नंगा करके सड़कों पर घुमाया गया। इससे अधिक शर्मनाक कार्य क्या हो सकता है?

मुहम्मदी पंथ की भारतीय महिलाओं पर तो अत्याचार की सीमा ही नहीं है। घनघोर अशिक्षा, अस्वास्थ्यकर पर्दा, अस्वच्छ आवास और वातावरण, बार-बार बच्चे पैदा करने की यन्त्रणा, उचित आहार के अभाव में कुपोषण और तपेदिक आदि बीमारियाँ, कई-कई सौतों को झेलना और सब से बड़ी यातना यह कि जब चाहे तब तीन बार 'तलाक-तलाक-तलाक' कहकर पुरुषों द्वारा उन्हें निराधार छोड़ देना।

प्रायः महिलाओं के सम्मेलन में 'पुरुष प्रधान समाज' शब्द तकिया कलाम जैसा बार-बार आता है और पुरुषों के आधिपत्य से मुक्ति की बातें बढ़-चढ़कर की जाती है। स्मरण रहे, दासता की मनोवृत्ति वाले कुछ पुरुषों के अनुचित व्यवहार का दंड सारे पुरुष समाज को देना उचित नहीं है। नारी माँ है। प्रत्येक नारी की पहचान उसके सन्तान की माँ के रूप में होती है जैसे रामू की माँ, श्यामू की माँ आदि। तब नारी माँ के इस ऊँचे आसन से उतारकर पुरुष की प्रतिद्वंदी और प्रतिस्पर्धा क्यों बन गई है? उसे तो हर क्षेत्र में पूरक और सहयोगी की भूमिका निभानी चाहिए।

ये प्रेरक विचार और संकल्प किसी दायित्वहीन 'प्रवचन' के अंश नहीं भारत की हिन्दू नारियों के हैं। गत सात मई 1994 को दिल्ली के इंदिरा गांधी स्टेडियम में एकत्र पचास हजार से भी अधिक हिन्दू महिलाओं ने एक लाख से भी अधिक संख्या में अपना हाथ ऊपर उठाकर अपने इस संकल्प का उद्घोष किया कि 'अपने समाज की समस्त संकीर्णताओं, कुरीतियों और कुण्ठाओं को मिटाकर एक समरस, सबल, न्यायपूर्ण और वैभव सम्पन्न राष्ट्र का निर्माण करने का कार्य हम अपनी सम्पूर्ण शक्ति और तन-मन-धन से करेंगे और अपना यह कार्य अपने समाज और राष्ट्र के सर्वागीण विकास होने तक अविश्रान्त और अविरल करते रहेंगे।'

(शेष भाग अगले अंक में)

जब–जब देश पर विपत्ति आई, दैवी शक्तियाँ आसुरी शक्ति से हारी, तब–तब शक्ति स्वरूपा नारी ने विभिन्न रूपों में प्रकट होकर राष्ट्र, धर्म, संस्कृति और परम्पराओं की रक्षा की। वेदकालीन नारी, प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष की सहभागिनी थी। गृहस्थ धर्म से जुड़े अनुष्ठान, यज्ञ–कर्म आदि तो वह करती ही थी, राजनीति में मंत्रणा करना, युद्ध–भूमि में जाना और ज्ञान–चर्चाओं एवं सभा सत्रों में भाग लेकर समाज के चारित्रिक उत्थान की भी वह चिन्ता करती थी।

पूज्य सद्गुरुदेव अनन्तश्री विभूषित युगपुरुष महामंडलेश्वर स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज का 71वाँ संन्यास जयंती महोत्सव

हरिद्वार, उत्तराखण्ड.

विगत 19 अप्रैल को अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर पूज्य गुरुदेव अनन्तश्री विभूषित युगपुरुष महामंडलेश्वर स्वामी परमानन्द जी महाराज का 71वाँ संन्यास जयंती समारोह श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सम्पूर्ण भारत की सन्तशक्ति ने उनका वन्दन करते हुए उनके श्रीचरणों में अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की। समारोह में मुख्य रूप से उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री श्री पुष्करसिंह धामी, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष पूज्य श्री महन्त डॉ.रवीन्द्र पुरी जी महाराज, निर्वाण पीठाधीश्वर आचार्य पूज्य महामंडलेश्वर स्वामी विशोकानंद भारती जी महाराज, पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी, पूज्य महामंडलेश्वर स्वामी श्री ज्योतिर्मयानन्द जी महाराज, पूज्य बाबा रामदेव जी, पूज्य आचार्य बालकृष्ण जी, पूज्या साध्वी निरंजन ज्योति जी, पूज्या साध्वी साक्षी चेतना जी, पूज्या साध्वी चैतन्य सिन्धु जी, पूज्य महामंडलेश्वर स्वामी श्री बालकानन्द जी महाराज, पूज्य महामंडलेश्वर स्वामी श्री चित्प्रकाशानन्द जी महाराज, पूज्य स्वामी श्री चिदानन्द मुनि जी महाराज, पूज्य बाबा श्री निर्मलदास जी महाराज, ज्ञानी श्री शेरसिंह जी एवं विश्व हिन्दू परिषद के महामंत्री श्री बजरंग बागड़ा सहित अनेक सिद्ध सन्त शक्तियाँ इस महोत्सव में सम्मिलित हुईं। आध्यात्मिक दिव्यता के बीच पूज्य गुरुदेव का चरणाभिनन्दन किया गया। इसके पूर्व श्री पुष्करसिंह धामी ने सप्त सरोवर पर नवनिर्मित अखण्ड परमधाम गंगा घाट का लोकार्पण भी किया।

समारोह को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए पूज्य युगपुरुष महामंडलेश्वर अनन्तश्री विभूषित स्वामी परमानन्द जी महाराज

पूज्य गुरुदेव से प्रेरित होकर उत्तराखण्ड सरकार काम कर रही है

-पुष्करसिंह धामी (मुख्यमंत्री-उत्तराखण्ड)

आज देवभूमि हरिद्वार में स्थित अखण्ड परमधाम में पूज्य गुरुदेव श्री युगपुरुष जी महाराज के 71 वें संन्यास जयंती समारोह में आकर मैं अपनी धन्यता को अनुभव कर रहा हूँ। वैसे तो आज अक्षय तृतीया पर चारों धाम के कपाट खुल रहे हैं और मुझे वहाँ जाना है परन्तु जैसे ही मुझे इस आयोजन में सम्मिलित होने के लिए हमारी पूज्या दीदी माँ जी ने कहा, तभी मैंने निश्चय कर लिया था कि भले ही थोड़े समय के लिए परन्तु मैं गुरुदेव के इस संन्यास जयंती समारोह में अवश्य सम्मिलित होऊँगा। भाईयों-बहनों हम सभी जानते हैं हमारे पूज्य गुरुदेव श्री युगपुरुष जी महाराज ने अपने जीवन में हमेशा लोगों को आगे बढ़ाने का काम किया है। उन्होंने केवल स्वयं के लिए न जीकर देश, धर्म और समाज के लिए अपने को लगातार समर्पित किया। आज हमारी सरकार भी लगातार उनसे प्रेरणा लेकर आदरणीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में देवभूमि उत्तराखण्ड का समग्र विकास करने के लिए निरन्तर प्रयास कर रही है। आने वाले समय में आपको भगवान बद्रीविशाल, भगवान केदारनाथ, यमुनोत्री और गंगोत्री की भव्यता और दिव्यता का दर्शन होगा। अगले वर्ष हरिद्वार में कुंभ मेले का आयोजन है। हमारी सरकार इसकी दिव्यता और भव्यता के साथ श्रद्धालुओं को इस दौरान कोई असुविधा न हो, इसके लिए विभिन्न योजनाओं पर लगातार काम कर रही है। हमने देवभूमि की पवित्रता को विधर्मियों से बचाने के लिए भी अभियान चलाया हुआ है। इसके अन्तर्गत अवैध मजारों, मदरसों और मस्ज़िदों को ध्वस्त कर अब तक हजारों एकड़ शासकीय भूमि को मुक्त किया जा चुका है।

देश में सबसे पहले उत्तराखंड राज्य ने ही 'समान नागरिक संहिता' को लागू किया है। हमने राज्य मदरसा बोर्ड को भंग कर दिया है। अब जुलाई 2026 से सम्पूर्ण उत्तराखण्ड के मदरसों को शिक्षा विभाग द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रमों को अनिवार्य रूप से लागू करना होगा। जो मदरसा इसका पालन नहीं करेगा, उसे बन्द करवा दिया जाएगा। 'धर्मांतरण विरोधी कानून' को लागू करके हमारे राज्य ने स्पष्ट संदेश दिया है कि अब 'लव जिहाद' को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। हिन्दू बहन-बेटियों की सुरक्षा हमारी प्राथमिकता है। उत्तराखण्ड में अब लव जिहाद के साथ ही लैंड जिहाद और थूक जिहाद के विरुद्ध भी कड़ाई से कार्रवाई की जा रही है।

पुनः एक बार पूज्य गुरुदेव श्री युगपुरुष जी महाराज के 71 वें संन्यास जयंती समारोह पर उनके चरणों में प्रणाम करते हुए मैं ईश्वर से उनके स्वस्थ एवं शतायु जीवन की प्रार्थना करता हूँ।

अहम् निर्विकल्पो निराकार रूपो
विभुव्याप्य सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम।
सदा मे समत्वं न मुक्तिः न बंधः
चिदानंद रूपः शिवोहम् शिवोहम् ॥

गंगाजी के किनारे सप्त सरोवर में अखण्ड परधाम द्वारा जनहित में निर्मित करवाये गए 'अखण्ड परमधाम गंगा घाट' का लोकार्पण करते हुए उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री श्री पुष्करसिंह धामी। इस अवसर पर अक्षय तृतीया के पावन दिवस पर आयोजित पूज्य गुरुदेव के 71 वें संन्यास जयंती महोत्सव में अनेक पूज्य सन्तों का सानिध्य प्राप्त हुआ।

सज्जनों, सम्पूर्ण भारत को आध्यात्मिक उर्जा देने वाले और अपने संकल्प से एक बहुत बड़ी उर्जा को पैदा करने वाले हमारे गुरुदेव श्री युगपुरुष जी महाराज हैं। उस उर्जा का नाम है दीदी ऋतम्भराजी। गुरुदेव की प्रेरणा से उन्होंने सारे देश में श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन की अलख जगाई। लोग हमसे पूछते थे कि ये 'युगपुरुष' कैसे हुए? हमने कहा कि समय आने पर जवाब देंगे। अयोध्या में श्रीराम मंदिर की प्रतिष्ठा के बाद में हमने जवाब देना शुरू किया कि देखो जिन्होंने इस कलियुग में भी त्रेता को प्रतिष्ठित कर दिया, वे 'युगपुरुष' नहीं तो और क्या हैं। तो ऐसे पूज्य गुरुदेव का 'एकलव्य' बनकर हमें अपार आनन्द की प्राप्ति होती है। आज हम सभी उनका दर्शन करते हुए स्वयं की धन्यता को अनुभव कर रहे हैं।

– स्वामी विशोकानंद भारती जी महाराज

(आचार्य महामंडलेश्वर निर्वाण पीठाधीश्वर)

आज हमारे पूज्य गुरुदेव के 71वें संन्यास जयंती महोत्सव में सम्मिलित होकर बहुत आनन्द का प्राप्ति हो रही है। मुझे याद आता है वर्षों पुराना वो संस्मरण जब कुंभ मेले में हमने दीदी माँ ऋतम्भराजी से निरंजनी अखाड़े का महामंडलेश्वर बनने का निवेदन किया था लेकिन उन्होंने बहुत ही विनम्रतापूर्वक यह कहकर मना कर दिया कि 'जो स्थान मेरे पूज्य गुरुदेव का है, मैं उसके बराबर कभी नहीं बैठ सकती।' यह सचमुच ही अपने गुरुदेव के सच्चे सम्मान का प्रतीक है और हमारे पूज्य श्री युगपुरुष जी महाराज ने ऐसे शिष्यों का निर्माण किया है जो गुरुदेव के सम्मान को ही अपना सम्मान समझकर धन्य होते हैं। सनातन की ऐसी ज्वाज्जल्यमान परम्परा को निरन्तर बनाए रखने के लिए मैं गुरुदेव के समक्ष नमन करता हूँ।

-डॉ.रवीन्द्र पुरी जी महाराज

(अध्यक्ष-अ.भा.अखाड़ा परिषद)

हमारे परम पूज्यनीय युगपुरुष जी महाराज ने उस समय हिन्दू समाज का हाथ थामा, जिस समय हिन्दू को हिन्दू के नाते व्यवहार करने में डर लगता था। तब संघ का निर्णय था, जिसने विश्व हिन्दू परिषद के हाथ में एक ध्वज पकड़ा दिया परंतु उसकी कोई ताकत नहीं थी कि यह इतना बड़ा आंदोलन चला सके। पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से पूज्य दीदी ऋतम्भराजी ने तब दुर्गा वाहिनी की प्रथम राष्ट्रीय संयोजिका बनकर लाखों दुर्गाओं को समाज सेवा के मार्ग पर प्रशस्त किया। पूज्य गुरुदेव ने अपने शिष्यों के माध्यम से कार्यकर्ताओं में ऊर्जा संचार किया, इसके लिए हिन्दू समाज हमेशा आपका ऋणी रहेगा। आज आपके 71वें संन्यास जयंती महोत्सव पर हम सब आपके श्रीचरणों में अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

-बजरंग बागड़ा

(महामंत्री-विश्व हिन्दू परिषद)

भारत दुर्गा मंदिर शिलान्यास समारोह

नागपुर, महाराष्ट्र

विगत 24 अप्रैल को 'श्री आबाजी थत्ते सेवा और अनुसंधान संस्था' की ओर से प्रस्तावित भारत दुर्गा मन्दिर का शिलान्यास जामठा में नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट परिसर में सम्पन्न हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने पूज्यपाद संतों के आध्यात्मिक सानिध्य में शिलान्यास स्थल पर विधिवत् पूजन-अर्चन किया। इस अवसर पर जूना अखाड़ा पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर पूज्य स्वामी श्री अवधेशानंद गिरि जी महाराज, पूज्य स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी महाराज, पूज्य स्वामी श्री मित्रानंद जी महाराज, पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी, बागेश्वर धाम पीठाधीश्वर आचार्य श्री धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री जी, श्री भैय्याजी जोशी, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फड़णवीस एवं केंद्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी ने मंच को सुशोभित किया। श्री आशुतोष अडोनी ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा श्री शैलेष जोगलेकर ने आयोजन की प्रस्तावना रखते हुए इस मन्दिर की जानकारियाँ प्रदान करते हुए विस्तारपूर्वक अपने विचार रखे। पूज्य संतों एवं विशिष्ट अतिथिजनों ने इस अवसर पर आयोजन को संबोधित करते हुए इस प्रयत्न के प्रति अपनी शुभकामनाएँ प्रकट कीं।

भारत दुर्गा मन्दिर की विशेषताएँ :

- इस मन्दिर में अठारह भुजाओं वाली भारत दुर्गा स्वरूपिणी भारत माता की प्रतिमा स्थापित होगी।
- इसका अद्‌भुत वास्तुशिल्प और भारतमाता का दिव्य दर्शन श्रद्धालुओं को भावविभोर करते हुए उनमें राष्ट्रचेतना का संचार करेगा।
- इसे एक शक्तिपीठ के रूप में मान्यता प्राप्त होगी जो कि शक्ति, सत्य और भारतीयता का प्रतीक होगा।
- लगभग 5 एकड़ क्षेत्रफल में इसका निर्माण डॉ. आबाजी थत्ते सेवा और अनुसंधान संस्था द्वारा करवाया जा रहा है।

भारत दुर्गा मन्दिर शिलान्यास समारोह, नागपुर

प्रकृति का प्राण स्पन्दन है भारत

-दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

अद्भुत हैं हमारी भारत माता। इनके अतीत, आगत और अनागत तीनों की एक ही ताल, एक ही लय है। इसका प्रत्येक पल मंगल, इसका हर क्षण क्षणभंगुरता को शाश्वतता प्रदान करता हुआ। यहाँ कुछ भी नश्वर नहीं, सब कुछ अनश्वर और अविनाशी है।

दिनों, सप्ताहों, महीनों और वर्षों में विभाजित सभ्यता का नहीं, धार्मिक और सांस्कृतिक निरन्तरता का नाम है - भारत। यह साधना और तप, एकात्मता और वात्सल्य की कोख में जन्मा है। एकात्मता - लोक जीवन के साथ और तादात्म्य - प्रकृति और सृष्टि के साथ।

प्रकृति का प्राण स्पंदन भारत, अमाप आकाश का स्वामी है। सागर की तरह अगाध है। इसकी गति सृष्टि की गति है, इसका ज्ञान संसार का ज्ञान है, इसकी निरन्तरता में परमेश्वर की निरन्तरता विद्यमान है। मानवीय गुण-दोष, शुभ-अशुभ, सत्य-असत्य। सदाचार-अत्याचार, न्याय-अन्याय, सेवा-साधना, बलिदान और समर्पण, अधिकार और कर्तव्य की पारिभाषक और प्रथम प्रयोग भूमि है भारत ।

यहाँ के साधकों ने अपनी साधना, तपस्वियों ने अपने तप, भक्तों ने अपनी भक्ति, ज्ञानियों ने अपने ज्ञान,विद्वतजनों ने अपने वांग्मय, शूरों ने अपने शौर्य, शहीदों ने अपने प्राण रक्त से इसका अभिषेक, इसकी आराधना और इसका अभिवादन किया है। हमारी भारत माता जीवित, जागृत, बलदायिनी, प्रेमदायिनी, शक्तिरूपिणी, सौम्यरूपिणी माँ दुर्गा की साक्षात विग्रह हैं।

हे माता ! स्वार्थ से मृयमाण हो रहे अपने भारत को महत् बनाओ, सत्संकल्पी बनाओ। अन्तयस्थ रिपुओं का संहार कर बाहर के बाधा विघ्नों को दूर करो कि बलशाली, पराक्रमी, परन्त्य उन्नतचेता राष्ट्र यज्ञ के पवित्र कुंजों काननों में, उर्वर खेतों में, गगन सहचर पर्वतों की तलहटी में, पुण्य सलिला नदियों के तट पर, एकता में, प्रेम में, सत्य में, शिल्प में, साहित्य में, ज्ञान में, विज्ञान में श्रेष्ठ बन निवास करें।

हे माता ! प्रकट हो, हे कृयाणपाणी देवी ! हे असुर विनाशिनी ! आशीष दो कि हम विमल, निर्मल हो जाएँ। बस यही प्रार्थना है माता ! हे शस्यश्यामला, अमला, विमला, अतुला, जाड्यापहा, दशप्रहरधारिणी, रिपुदलवारिणी, मंगलमयी माँ! हम तुम्हारी संतानें, तुम्हारे साक्षात् आभिर्भाव की प्रतीक्षा करा रहे हैं।

हमारे पूर्वज इसी भाव प्रार्थना के साथ भारतमाता का यशोगान करते आए हैं , इन्हीं भावों के साथ हम सब उनके चरणों में प्रणत हैं और यही वंदना हमारी भावी पीढ़ियां अनंतकाल तक करती रहेंगी।

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता और संतोष है कि इस महान भारत के निर्माण में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माननीय सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी की प्रेरणा और सत्संकल्प से भारतमाता के इन सभी गुणानुवादों का दर्शन आने वाले समय में नागपुर के प्रस्तावित 'श्री भारत दुर्गा मंदिर' में होगा, जिसका आज शिलान्यास सम्पन्न हुआ है। इस मंदिर में अठारह भुजाओं के साथ धैर्य, क्षमा, संयम, निष्ठा, शुचिता, इन्द्रिय संयम, विद्या, आध्यात्मिक ज्ञान, सत्य तथा शांति के विराट विग्रह रूप में अपनी सम्पूर्ण दिव्यता और भव्यता के साथ विराजेंगी।

माननीय सरसंघचालक जी का यह आकल्पन केवल एक मंदिर के रूप में ही साकार रूप नहीं लेगा, बल्कि यह एक क्रांतिकारी विचार होगा, जो सम्पूर्ण भारतवासियों के लिए श्रद्धा केंद्र होगा जो उन के मन में पहले से ही स्थापित है। यहाँ प्रतिष्ठित होने वाली अष्टादश भुजाधारी भारत माता का दर्शन भारतवासियों के मन में उन गुणों को और भी अधिक सशक्त करेगा, जिनके कारण भारत 'भारत' बना हुआ है, अनेक झंझावातों के बावजूद।

आज भारत के सामने अनेक चुनौतियों के बीच सबसे बड़ी बात है संगठित रहना, एक रहना। भारत माता की आराधना हमें यही शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करती है। भारत दुर्गा मंदिर के सभी संकल्पकर्ताओं और शिल्पज्ञों को मैं बहुत-बहुत शुभकामनाएँ प्रदान करती हूँ कि इस शक्ति स्थल का निर्माण अपने उद्देश्यों को प्राप्त करे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस भव्य मन्दिर में भारत माता का दिव्य दर्शन करके देशवासियों में अपने राष्ट्र के प्रति निष्ठा एवं उत्तरदायित्वों के निर्वहन की भावना जाग्रत होगी।

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन का 24 वाँ स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

वृन्दावन

वात्सल्यपूर्ण मानव सेवा को समर्पित वृन्दावन स्थित वात्सल्य ग्राम के 24 वें स्थापना दिवस समारोह का भव्य आयोजन स्थानीय 'संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल' के सभागार में अत्यन्त ही प्रतिष्ठापूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वात्सल्य ग्राम की संस्थापिका पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के कर कमलों द्वारा वात्सल्य ग्राम के उन यशोदा माताओं को सम्मानित किया गया, जिन्होंने अपने जीवन भर के समर्पण के साथ इस संस्थान को अपने लक्ष्य तक पहुँचाने की गति प्रदान की। श्री लक्ष्मीनारायण चौधरी (कैबिनेट मंत्री-उत्तरप्रदेश शासन) आयोजन के मुख्य अतिथि रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रख्यात समाजसेवी श्री नारायणदास अग्रवाल ने अपनी प्रतिष्ठापूर्ण उपस्थिति से आयोजन को सुशोभित किया।

समारोह की जानकारी देते हुए वात्सल्य ग्राम के मीडिया प्रभारी डॉ.उमाशंकर 'राही' ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। तत्पश्चात् छात्राओं द्वारा प्रस्तुत वंदना नृत्य ने उपस्थित जनसमूह का मन मोह लिया। संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल, कृष्णा ब्रह्मरतन विद्या मन्दिर तथा वैशिष्ट्यम् स्कूल की छात्राओं ने विशेष सांस्कृतिक प्रस्तुति के द्वारा भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों एवं राष्ट्रभक्ति का सुंदर संदेश दिया।

विशेष प्रस्तुति के रूप में कवि श्री विनीत चौहान द्वारा संयोजित 'भारत गौरव गाथा' का राष्ट्रभक्तिपूर्ण मंचन किया गया, जिसने उपस्थित जनसमूह में राष्ट्र गौरव की भावना का संचार किया। इसके अन्तर्गत संस्कार, संस्कृति एवं राष्ट्रभावना से ओतप्रोत प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध करते हुए भारत के स्वाधीनता संग्राम संघर्ष को जीवंत किया।

समारोह के दौरान हिंदी भाषा एवं शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले शिक्षकों को 'हिंदी ओलंपियाड सम्मान' के अंतर्गत ट्रॉफी एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के अंत में पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने अपने प्रेरणादायी आशीर्वचनों से सभी को अभिभूत किया। उन्होंने सेवा, संस्कार एवं राष्ट्रभक्ति को जीवन का आधार बताते हुए युवाओं से भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं मानवता की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहने का आह्वान किया।

समारोह में उपस्थित अतिथियों ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए इसे अत्यन्त प्रेरणादायी एवं अविस्मरणीय बताया। कार्यक्रम में महापौर श्री विनोद अग्रवाल, आचार्य श्री बद्रीश जी, डॉ. मनोज मोहन शास्त्री, पूर्व मंत्री श्री रविकान्त गर्ग, श्री महेश खण्डेलवाल, श्री संजय भैयाजी, सुश्री सुमनलता जी, श्री जयभगवान अग्रवाल, श्री अरुण शर्मा, श्री ब्रजमोहन पाठक एवं श्री ओमप्रकाश बंसल की प्रतिष्ठापूर्ण उपस्थिति एवं महामण्डलेश्वर स्वामी श्री चित्प्रकाशानन्द जी महाराज, स्वामी श्री वेदानन्द जी महाराज एवं स्वामी श्री सत्यानन्द गिरि का पावन सानिध्य रहा। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती राधिका राजपूत जी ने किया।

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन की उन यशोदा माताओं को
पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी का स्नेहाशीष,
जिन्होंने इस स्थान को सार्थक किया,
अपनी अहर्निश वात्सल्य साधना से।

सुश्री सुमनलता जी

सुश्री सीता जी

सुश्री साथी जी

सुश्री समर्पिता जी

सुश्री संबोधि जी

सुश्री साधिका जी

वात्सल्य ग्राम उन नन्हें नवजातों के लिए ईश्वर का उपहार है, जो किन्हीं कारणोंवश अपनी जननी की गोद से छिटक गए थे। भगवान केशवदेव की कृपा और पूज्य गुरुदेव की पावन प्रेरणा से मेरे मन में वात्सल्य सृष्टि की कल्पना जाग्रत हुई। यह कल्पना कभी साकार न हो पाती यदि श्रीकृष्ण-यशोदा की भाव भूमि 'वात्सल्य ग्राम' की आप यशोदा माताओं ने इस प्रकल्प में अपना सर्वस्व समर्पण न किया होता।

अत्यल्प साधनों के साथ वात्सल्य सृष्टि का आरंभ हुआ था। दो कमरों के घर में बीस बच्चों के साथ प्रारंभ और फिर वात्सल्य ग्राम के पैंसठ एकड़ क्षेत्र में उसका विस्तार एक लंबी यात्रा है। लोग दो बच्चों के पालन-पोषण में परेशान हो जाते हैं और यहाँ वात्सल्य ग्राम के एक-एक परिवार में आपने कई-कई बच्चों को न केवल पाला-पोसा बल्कि उनकी पालने से पालकी तक की यात्रा में अपना सर्वस्व न्यौछावर किया है। महीनों तक एक चारदीवारी में रहकर केवल बच्चों के लिए अपने दिन और रात समर्पित कर देना किसी तपस्या से कम नहीं है।

आपके वात्सल्य, स्नेह और प्रेम में पगे हुए इन बच्चों को आज जब मैं सामाजिक जीवन में प्रतिष्ठित होते देखती हूँ तो मन आप सबके प्रति एक अव्यक्त आभार से भर उठता है। भले ही अपने भागदौड़ भरे सामाजिक जीवन में आपको अपने स्नेहालिंगन में बांधने का अवसर मुझे कम ही मिल पाता हो परन्तु आप सब मेरे बहुत गहरे अन्तर्मन में बसी हुई हो। गोकुलम् की चारदीवारी से भले ही वात्सल्य परिवारों की व्यस्तताएँ आपको बाहर नहीं निकलने देती हों परन्तु आपकी कर्मनिष्ठा की सुरभि चारों दिशाओं को सुगंधित करती है। आपका योगदान पारिजात के उस पुष्प के समान है जो रात्रि की नीरवता में चुपचाप झरकर, भोर को एक अव्यक्त सुरभि से भर देता है।

आज 'वात्सल्य ग्राम स्थापना दिवस' के पावन अवसर पर मैं आपका अभिनन्दन करते हुए अभीभूत हूँ। प्रभु से प्रार्थना है कि आप सदैव ही स्वस्थ और आनंदित रहकर वात्सल्य की इस सृष्टि को अपना पोषण प्रदान करती रहें।

साध्वी ऋतम्भरा

(दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा)

सुश्री शाश्वती जी

सुश्री उमा जी

सुश्री सत्यज्योति जी

सुश्री प्रीति जी

सुश्री सारिका जी

श्रीमती अनुपम जी

भारत गौरव यात्रा की क्रान्तिकारी प्रस्तुति

वात्सल्य ग्राम स्थापना दिवस महोत्सव पर संविद गुरुकुलम् स्कूल्स की सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ

हिन्दी ओलंपियाड फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी ओलंपियाड-2025 में 'संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल' को सर्वश्रेष्ठ विद्यालय पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के स्थापना दिवस पर विजेता ट्रॉफी के साथ पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी एवं विद्यालय परिवार।

'इंटरनेशनल साइंस ओलंपियाड 2025-26' में पुरस्कार प्राप्त संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल की छात्राओं कु. प्रतिष्ठा शुक्ला एवं कु. यशिका जिंदल को सम्मानित करते हुए श्री रविकांत गर्ग एवं श्री लक्ष्मीनारायण चौधरी।

'भारत गौरव यात्रा' के संयोजक श्री विनीत चौहान को सम्मानित करते हुए पूज्या दीदी माँ जी एवं विशिष्टजन

जो हमारी भारत की संस्कृति है, जो हमारा सनातन धर्म है, उनकी जड़ों को जिस तरह से दीदी माँ ने मजबूत किया है, युगों-युगों तक लोग इसको याद रखेंगे। जिस तरह से राम मंदिर को दुनिया याद करेगी, उसी तरह राम मंदिर में योगदान देने वाली दीदी माँ और वात्सल्य ग्राम को भी याद किया जाएगा। वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के आज 23 वर्ष पूरे हुए हैं। एक छोटा-सा जो बीज दीदी माँ ने बोया था, वह आज वट वृक्ष बनकर यहाँ फल भी दे रहा है और छाया भी दे रहा है। मैं राधारानी के चरणों में प्रार्थना करता हूँ कि इसी तरह से ये फलता-फूलता रहे और इसी तरह से हमारे हजारों भाई और बहन इस वात्सल्य ग्राम के माध्यम से दीदी माँ का नाम भी रोशन करते रहें।

– लक्ष्मीनारायण चौधरी

(कैबिनेट मंत्री-उत्तरप्रदेश सरकार)

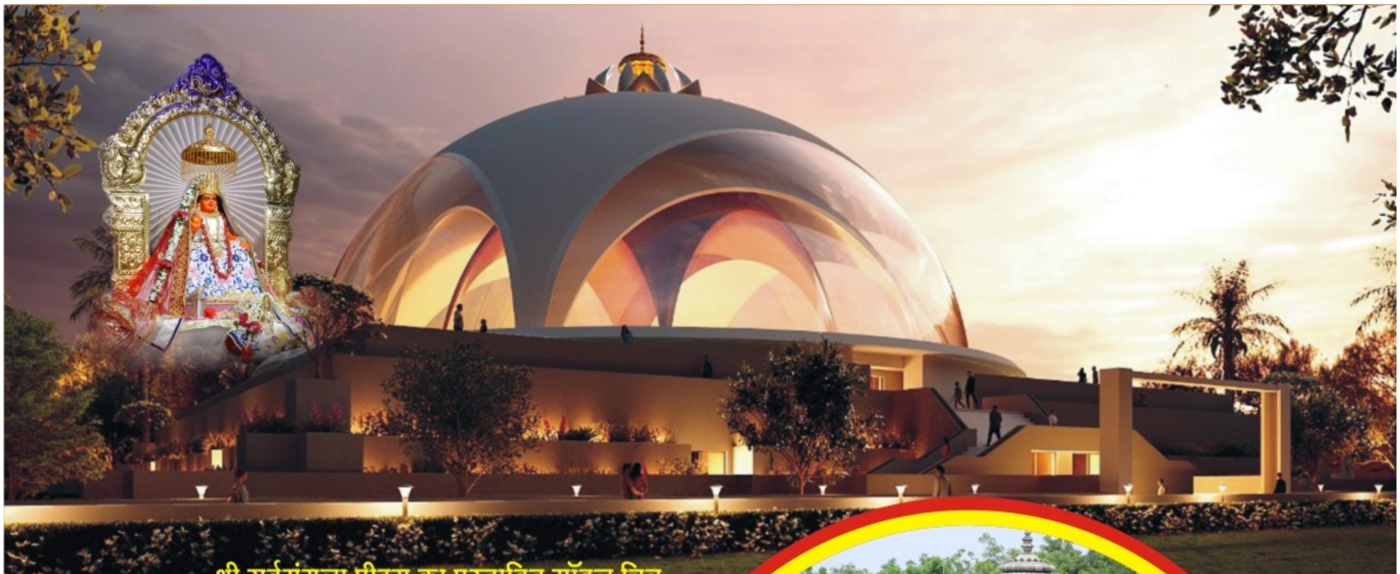

श्री सर्वमंगला पीठम् का प्रस्तावित मॉडल चित्र

वात्सल्य ग्राम वृन्दावन में निर्माणाधीन

श्री सर्वमंगला पीठम्

विशेषताएँ :

- लगभग डेढ़ लाख वर्गफीट क्षेत्रफल में विस्तारित एवं एक सौ चौदह फीट की ऊँचाई लिए हुए श्री सर्वमंगला पीठम् शिल्पकला की दृष्टि से अद्वितीय होगा।
- रज, तम और सत्व गुणों को प्रदर्शित करती इसकी तीन पारदर्शी छतें मध्य से बिना किसी सहारे के निर्मित होंगी।
- इन विशाल छतों के ठीक नीचे माँ सर्वमंगला अपने सृजनात्मक, कल्याणक, वात्सल्यमयी तथा माधुर्य रुप में विराजेंगी।
- पीठम् की तल मंजिल पर एक अत्याधुनिक प्रदर्शनी होगी, जिसके माध्यम से सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग में भारतीय नारी की भूमिका के सुनहरे अध्यायों को दर्शाया जाएगा। प्रथम मंजिल पर माँ सर्वमंगला माता के चारों ओर चलित परिक्रमा पथ होगा।
- मन्दिर के चारों ओर स्टेडियमनुमा सीढ़ियों का निर्माण किया जा रहा है, जहाँ बैठकर श्रद्धालुगण माता का मनोहारी दर्शन कर सकेंगे। मन्दिर भवन के चारों ओर नयनाभिराम बाग–बगीचे भी होंगे, जिनमें बैठकर श्रद्धालुओं को अनुपम शान्ति का अनुभव होगा।

श्री सर्वमंगला पीठम् के निर्माण में

एक ईंट हेतु मात्र 1100/– का सहयोग समर्पित कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

आप अपनी सहयोग राशि का चेक अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट 'परमशक्ति पीठ' के नाम से सम्पूर्ण भारत में किसी भी शाखा से जमा करवा सकते हैं।

5,00,000/- (पाँच लाख रुपयों) की सहयोग राशि समर्पित कर 'माँ सर्वमंगला न्यास' के न्यासी बनने हेतु सम्पर्क करें – 011-22238751, 22238757

बैंक का नाम : यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
खाते का नाम : परमशक्ति पीठ
खाता संख्या : 520101244630425
IFS Code : UBIN0905321
MICR : 110026344
शाखा : सी–50, प्रीत विहार, दिल्ली

शुभागमन एवं पावन सानिध्य

श्रीमद् भागवत कथा मंच पर पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी से
आशीर्वाद प्राप्त करते हुए श्री रवीन्द्र यादव

लखनऊ (उ.प्र.)

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी का विगत 15 मई को उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ में शुभागमन हुआ। अवसर था उनके शिष्य एवं परमशक्ति पीठ के सहयोगी श्री रवीन्द्र यादव के नूतन गृह प्रवेश का। आप लखनऊ के ख्यात बिल्डर एवं समाजसेवी हैं। इस शुभ अवसर पर पूर्व केन्द्रीय मंत्री पूज्या साध्वी निरंजन ज्योति जी एवं वात्सल्य ग्राम, ओंकारेश्वर, म.प्र. की संचालिका पूज्या साध्वी साक्षी चेतना जी एवं अनेक गणमान्यजनों ने इस भव्य समारोह को अपनी उपस्थिति से शोभायमान किया।

वात्सल्य प्रकाशन *की प्रस्तुतियाँ...*

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन विचारों से युक्त साहित्य परमशक्ति पीठ के 'वात्सल्य प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित किया जाता है, जो आपको जीवन की अनेक समस्याओं के सरल समाधान देता है। आप भी इन पुस्तकों को पढ़कर अपना जीवन सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर सकते हैं।

वात्सल्य साहित्य

01. आत्मसुख की ओर
02. सद्गुरु - बन्धनों के मुक्तिदाता
03. योग - सफल जीवन का रहस्य
04. सार्थक जीवन के सूत्र
05. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
06. जीवन का परमानन्द
07. साधना के पथ पर
08. जागो भारत की नारी
09. सद्गुरु - जीवन की आवश्यकता
10. माँ - सृष्टि की धुरी
11. मुझे बचाओ माँ
12. परमशक्ति योग (हिन्दी)
13. परमशक्ति योग (अंग्रेजी)
14. यशोदा भाव - वात्सल्य ग्राम की मूल प्रेरणा
15. अनुभूति
16. पाथेय
17. व्यक्तित्व और विचार
18. मेरी स्मृतियों के भानु भैया
19. शुभाशीष
20. युगपुरुष की युगयात्रा
21. पिबत भागवतं रसमालयम्
22. नया सवेरा लाओ (काव्य संग्रह)
23. साधना के स्वर (भजन संग्रह)
24. भजन वर्षा (भजन संग्रह)
25. मेरी छोटी सी है नाव (भजन संग्रह)
26. वात्सल्य
27. श्रीमद्भगवद्गीता
28. निरामय प्राकृतिक चिकित्सा

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भराजी के बाल्यकाल और श्रीरामजन्मभूमि संघर्ष की रोचक गाथा

साध्वी ऋतम्भरा और श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन

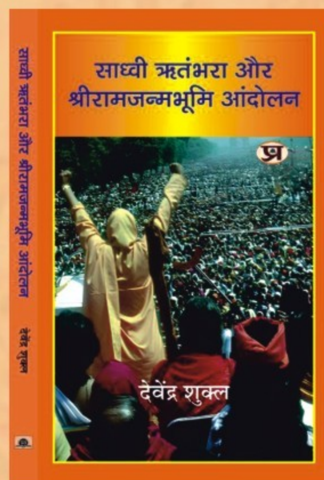

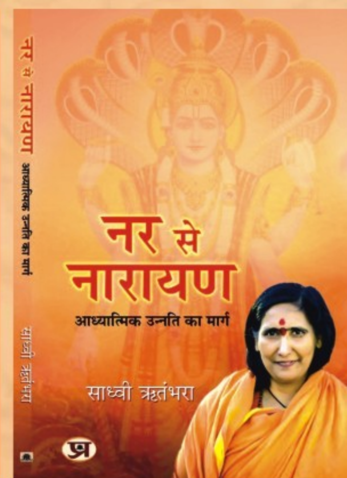

ये दोनों पुस्तकें www.prabhatbooks.com पर ऑनलाइन ऑर्डर करके घर बैठे मंगवाई जा सकती हैं

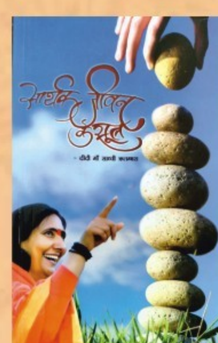

उपरोक्त साहित्य मंगवाने के लिए आप 'परमशक्ति पीठ' के निम्न पतों अथवा फोन नंबर्स पर सम्पर्क कर सकते हैं।

केन्द्रीय कार्यालय

परमशक्ति पीठ
लव-102, अग्रसेन आवास, 66 इन्द्रप्रस्थ विस्तार,
नई दिल्ली-110092
सम्पर्क फोन नं.-01122238751, 9958885858
ईमेल-info@vatsalyagram.org
वेबसाइट-www.vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय

वात्सल्य ग्राम
मथुरा-वृन्दावन मार्ग,
पोस्ट-प्रेमनगर
वृन्दावन, जिला-मथुरा (उत्तरप्रदेश) पिन-281003
सम्पर्क फोन नंबर-9412777151

परमशक्ति पीठ के सेवा प्रकल्प

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

के विभिन्न प्रकल्पों हेतु
आपके आर्थिक सहयोग का स्वागत है

परमशक्ति पीठ में आपका सहयोग

आजीवन सहयोगी	1,00,000/-
संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
कार्पोरेट सहयोगी	11,00,000/-

वत्सल निधि में आपका सहयोग

शिक्षा निधि (वार्षिक)	6000/-
वत्सल निधि (एक सुविधा) वार्षिक	24,000/-
वत्सल निधि (शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, होस्टल, अन्य) वार्षिक	1,20,000/-
बच्चों का एक समय का भोजन	21,000/-

वैशिष्ट्यम् स्कूल (दिव्यांग बच्चों हेतु) में आपका सहयोग

दिव्यांग बच्चों की समुचित देखभाल हेतु (वार्षिक)	1,50,000/-

चिकित्सा सेवाओं में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय में आयोजित होने वाले निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविरों हेतु (एक रोगी के ऑपरेशन हेतु)	3000/-
ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित होने वाले निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों हेतु (प्रति शिविर)	51,000/-

श्री सर्वमंगला पीठम् में आपका सहयोग

संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
एक शिला सहयोगी	1100/-

गौ सेवा में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन की 'कामधेनु गौगृह गौशाला' हेतु

प्रति गौमाता सहयोग (मासिक)	3100/-
प्रति गौमाता सहयोग (वार्षिक)	36,000/-
गौवंश हेतु भूसा सहयोग (दैनिक)	11,000/-
गौवंश हेतु हरा चारा सहयोग (दैनिक)	5100/-
गौ दान राशि	50,000/-

Param Shakti Peeth

Vatsalya Gram, Vrundavan

Your Donetion is welcome for our various service projects

Your Donation for Param Shakti Peeth

Life Member	1,00,000/-
Founder Member	5,00,000/-
Corporate Member	11,00,000/-

Your Donation for Vatsal Nidhi

Shiksha Nidhi (Annual)	6000/-
Vatsal Nidhi (For one facility) Annual	24,000/-
Vatsal Nidhi (Education, Health, Meal, Hostel etc.) Annual	1,20,000/-
One time meal for children	21,000/-

Your Donation for Vaishishtyam school

For proper care of disabled children (Annual)	1,50,000/-

Your Donation for Medical Services

•For cataract operation camps to be organized at Premvati Gupta Eye Hospital, Vatsalya Village] Vrindavan (For operation of one pataint)	3000/-
•For free health camps to be organized in rural areas	51,000/-

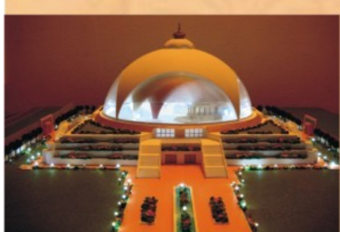

Your Donation for Shri Sarvmangla Peetham

Founder Member	5,00,000/-
One Brick donation	1100/-

Your Donation for Cow Shed

For Kamdhenu Gaugruh Gaushala of Vatsalya Gram

For One cow (Monthly)	3100/-
For One cow (Yearly)	36,000/-
Straw for cattle (Daily)	11,000/-
Green fodder cooperation for cattle (Daily)	5100/-
Cow donation fund	50,000/-

वात्सल्य ग्राम के साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद

परमशक्ति पीठ के सेवाकार्यों में आप अपना सहयोग इस प्रकार दे सकते हैं :

बैंक खातों में सीधे जमा करने के लिए जानकारियाँ

बैंक का नाम : पंजाब नेशनल बैंक
खाता क्रमांक : 1518000101014134
आई.एफ.एस.सी. कोड : PUNB0151800

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया
खाता क्रमांक : 10137296689
आई.एफ.एस.सी.कोड : SBIN0007085

दान के लिए ऑनलाइन लिंक :
https://www.vatsalyagram.org/donate

ऑनलाइन दान के लिए कृपया
इन क्यू.आर.कोड्स को स्कैन करें

चेक अथवा डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भी दान राशि परमशक्ति पीठ कार्यालय में भेजी जा सकती है।

प्रधान कार्यालय का पता :

परमशक्ति पीठ

लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज, नई दिल्ली –110092
सम्पर्क सूत्र : 011-22238751, 9999971714, 9999971716
ईमेल : donorcare@vatsalyagram.org **वेबसाइट :** www.vatsalyagram.org

आपका सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

योगदान प्रपत्र

जी हाँ, मैं वात्सल्य ग्राम के सेवा प्रकल्पों में अपना योगदान देना चाहता हूँ / चाहती हूँ। मेरा व्यक्तिगत विवरण इस प्रकार है।

श्री/श्रीमती/कुमारी ______________________________

व्यवसाय ______________

पता ______________________________

______________________ पिनकोड __________

सम्पर्क फोन नंबर ______________

ईमेल आई.डी. ______________________________

दान राशि (अंकों में) __________ (शब्दों में) ______________________

परमानेंट अकाउंट नंबर (PAN) ______________________

विनम्र श्रद्धांजलि

स्व.श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल, इन्दौर

वात्सल्य ग्राम, ओंकारेश्वर (मध्यप्रदेश) के कार्यकारी अध्यक्ष श्री पी.डी. अग्रवाल की धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल का स्वर्गवास परिवार के साथ ही समाजसेवा के क्षेत्र में हुई एक व्यापक क्षति है। आपने धर्मकार्यों के साथ एक आदर्श जीवन जीते हुए सदैव ही परमार्थ किया है। सद्कार्यों में आप श्री अग्रवाल जी की प्रेरणा रहीं। मैं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ कि वे उनके सूक्ष्म को अपनी दिव्य ज्योति में विलीन कर शोक संतप्त अग्रवाल परिवार को धैर्य प्रदान करें।

Donation Form

Yes, I want to contribute for Vatsalya Gram. My personal details are

Mr./Mrs/Ms :..

Occupation :..

Address :..

....Pin Code........................

Phone No. :............................ Mobile No. :..............................

email :...

Donation Amount (In digits) :......................(In words)ᵑᵑᵑ.........................

....Permanent A/c No..

Thanks for join hands with Vatsalya Gram

You can dontate your donation directly in following banks :

Bank name : Pujab National Bank	Bank name : State Bank Of India
A/c. No. : 1518000101014134	A/c. No. : 10137296689
IFSC Code : PUNB0151800	IFSC Code : SBIN0007085

Link for online donation : https://www.vatsalyagram.org/donate

Paytm Mobile Number of Donation : 88268 88001

'अधिक मास' क्यों होता है?

-रमेश रंजन त्रिपाठी

इस वर्ष मई महीने की सत्रह तारीख से अधिक मास शुरू हो गया है जो सोलह जून तक चलेगा। इस बार हिन्दू ज्येष्ठ मास दो हैं, एक शुद्ध और एक अधिक मास। आप समझ गए होंगे कि बात हिन्दू कैलेंडर के अधिक मास की हो रही है जिसे मलमास, पुरुषोत्तम मास आदि नामों से भी पुकारा जाता है। जैसा इसके मलमास नाम से स्पष्ट है, इस पूरे महीने को मलिन माना जाता है, इसलिए अधिक मास में कोई तीज-त्योहार नहीं मनाए जाते, विवाह नहीं होते। मान्यता है कि हिन्दू महीनों के स्वामी अलग-अलग देवता होते हैं। मलमास की अशुभता के कारण कोई देवता इसका स्वामी बनने के लिए तैयार नहीं हुआ, तब श्री विष्णु ने इसे अपना लिया। भगवान विष्णु का एक नाम पुरुषोत्तम है। उनके अधिक मास के स्वामी हो जाने से इसे पुरुषोत्तम मास कहा गया। प्रत्येक तीसरे साल अधिक मास होता है। ऐसा क्यों होता है? तर्कसम्मत जवाब है इसका।

हिन्दू वर्ष जिसे संवत्सर भी कहते हैं, चांद्र वर्ष है जो 354 दिन, 22 घटी, 1 पल और 23 विपल का होता है। सौर वर्ष में 365 दिन, 15 घटी, 22 पल और 57 विपल होते हैं। यानी दोनों में लगभग 11 दिन का अंतर होता है। तीन सौर वर्षों में यह अंतर एक महीने का हो जाता है। तीसरे साल एक चांद्र मास की वृद्धि कर इस अंतर को बराबर कर दिया जाता है। कौनसा महीना अधिक मास होगा, इसके लिए नियम है। हिन्दू कैलेंडर में चंद्रमा की कलाओं के घटने-बढ़ने के हिसाब से हर महीने पंद्रह-पंद्रह दिन के कृष्ण और शुक्ल, दो पखवाड़े होते हैं। सूर्य प्रतिमाह अपनी राशि बदलता है। सूर्य की एक राशि से दूसरी राशि में जाने की घटना संक्रांति कहलाती है। जिस हिन्दू मास में सूर्य की संक्रांति नहीं होती, उसे 'अधिक मास' कहा जाता है। इस वर्ष ज्येष्ठ के महीने में कृष्ण पक्ष के अंत में पंद्रह मई को सूर्य ने वृषभ राशि में प्रवेश किया है। सोलह को अमावस्या तिथि है। फिर पूरे एक महीने रवि इसी राशि में रहेगा। पंद्रह जून को सूर्योदय के समय मिथुन राशि का सूर्य और अमावस्या तिथि होगी। अर्थात् पंद्रह मई से पंद्रह जून तक ज्येष्ठ के पूरे महीने सूर्य की संक्रांति नहीं होगी इसलिए यह मल मास होगा।

ऐसा संयोग ज्येष्ठ मास में होने से इस साल दो ज्येष्ठ (एक शुद्ध और एक अधिक मास) होंगे तथा संवत्सर में तेरह महीने होंगे। पंद्रह जून के बाद अगला पखवाड़ा शुद्ध ज्येष्ठ का शुक्ल पक्ष होगा। फिर आषाढ़ मास प्रारंभ होगा। यह भी दिलचस्प है कि इसके विपरीत यदि रवि एक हिन्दू माह में दो बार राशि परिवर्तन करे तो उस महीने का क्षय मान लिया जाता है। यह संयोग लगभग एक सौ इकतालीस साल बाद आता है।

मल मास के संबंध में कुछ रोचक तथ्य भी जानने योग्य हैं। सामान्यतः वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद तथा आश्विन अधि मास हो सकते हैं। मल मास हर तीसरे साल होता है परंतु कोई विशेष महीना उन्नीस साल बाद अधिक मास हो सकता है। जब आषाढ़ पुरुषोत्तम मास होता है तब पुरी में जगन्नाथ भगवान की मूर्तियों को बदला जाता है। इस उत्सव को 'नव कलेवर' कहते हैं।

मल मास के संबंध में अनेक किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। एक रोचक कथा यह भी है कि दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने तपस्या कर ब्रह्माजी से अमर होने का वरदान मांगा। विधाता ने कहा कि मृत्युलोक में कोई अमर नहीं हो सकता। तब हिरण्यकश्यप ने चालाकी दिखाते हुए कहा कि वह न मनुष्य के हाथों मरे न जानवर से। उसकी मौत न अस्त्र से हो न शस्त्र से। वह न दिन में मरे न रात में। घर के अंदर या बाहर, धरती पर अथवा आकाश में कहीं उसकी मृत्यु न हो। इसके साथ उसने वर मांगा कि वह संवत्सर के बारहों महीनों में न मरे। ब्रह्माजी ने 'तथास्तु' कहा। दैत्यराज स्वयं को अमर मानकर अत्याचार करने लगा। तब उसका अंत करने के लिए श्रीहरि ने नरसिंह अवतार लिया और तेरहवें महीने मल मास की रचना की। अधिक मास में नरसिंह भगवान ने सायंकाल हिरण्यकश्यप को महल की देहलीज पर अपनी जांघों पर लिटाया और नाखूनों से उदर चीरकर उसका वध किया।

सनातन धर्म में 'अधिक मास' में ईश्वर की आराधना एवं संयमित जीवन बिताने की महत्ता का प्रतिपादन विस्तार से किया गया है।

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में

तीन दिवसीय भक्ति योग वेदान्त साधना शिविर सम्पन्न

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में विगत 9 से 11 मई तक 'भक्ति योग वेदान्त शिविर' सम्पन्न हुआ। परमशक्ति पीठ के अन्तर्गत धर्म जागरण प्रचारिकाओं हेतु संचालित 'वात्सल्य गंगा अभियान' की पूर्णकालिक कार्यकर्ता बहनों को इस शिविर में पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी का अनमोल पाथेय प्राप्त हुआ। प्रतिदिन प्रातः चार बजे जागरण के साथ आरंभ होकर ध्यान साधना के साथ आगे बढ़ते हुए दिन भर के विभिन्न सत्रों में शिविरार्थी समाज के बीच धर्म जागरण की विधाओं में पारंगत होने का प्रयत्न करते रहे।

शिविर के संयोजक स्वामी श्री सूर्यानन्द जी महाराज ने वात्सल्य गंगा अभियान के विषय में विस्तारपूर्वक बताया। इस अवसर पर पूज्या दीदी माँ जी ने शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि -'किसी भी व्यक्ति के जीवन में दृष्टिकोण बहुत महत्वपूर्ण है। बहुत सारे लोग हैं जो मुझे देखते हैं कभी एयरपोर्ट पर, कभी बस अड्डों पर, कभी स्टेशनों पर। कुछ लोग हैं जो दौड़ कर आएंगे, प्रणाम करेंगे। भीगी हुई आँखों से मेरा स्वागत करेंगे। कुछ लोग हैं जो पास से गुजरेंगे क्योंकि वो मुझसे जुड़े हुए नहीं है। किसी के लिए मैं सामान्य हूँ और किसी के लिए असामान्य। किसी के लिए विशेष हूँ और किसी के लिए साधारण। किसी के लिए मुझे पा लेना कोई बड़ी बात नहीं और किसी के लिए जीवन के रूपान्तरण की घटना घटित हो जाती है। तो क्या है यह? यह है दृष्टिकोण। श्रद्धा से देख लिया, प्रेम से देख लिया। आपने प्रेम से देखा तो आपके हृदय में तरंगे उठेंगीं। आपके रोम-रोम में रस घुलेगा। आपके कदमों में थिरकन आएगी। आपके शब्द गीत बन जाएंगे। आपका हृदय काव्य का आलाप करने लग जाएगा। क्या घटित हुआ? बाहर नहीं। श्रद्धा की दृष्टि से देखा गया तो आपके अन्तर्मन में महोत्सव पैदा हो गया। उत्सव पैदा हो गया। भक्ति की दृष्टि, प्रेम की दृष्टि, नेह की दृष्टि, स्नेह की दृष्टि, राग की दृष्टि, अनुराग की दृष्टि। द्वेष की दृष्टि, निराशा दृष्टि, विषाद से भरी, नकारात्मकता से भरी। सबसे सुंदर चीज होती है आशावादी होना। आपका दृष्टिकोण इतना मजबूत बनें कि कोई भी चीज, कोई व्यक्ति, कोई परिस्थिति, कोई उपेक्षा, कोई अपेक्षा, कोई प्रतिकूलता या कोई अनुकूलता, आपकी शांति को भंग ना कर सके। दूसरा सूत्र है जिससे भी मिलो मुस्कुरा के मिलो।

जब भी किसी से बात तो उसकी अच्छी सेहत के बारे में, उसकी तरक्की के बारे में, उसकी खुशियों के बारे में बात कीजिए। बढ़िया बात कीजिए। सबसे बढ़िया सोचें, सबसे बढ़िया बोलें और सबसे बढ़िया करें और सबसे बढ़िया होने की आशा रखें। यह है आशावादी नजरिया। इसके साथ ही स्वयं को श्रेष्ठ बनाने के लिए ज्यादा समय दीजिए। सुबह योग करके, प्राणायाम करके, उपासना करके, ध्यान करके, व्यवहार में मधुरता लाकर अपने आप को बढ़िया और बेहतर बनाने के लिए इतना व्यस्त हो जाइए कि किसी की बुराई देखने का समय ही नहीं रहे आपके पास। जब हम किसी और में केवल बुराईयाँ ढूँढते रहने के स्थान पर उसकी अच्छाईयों का दर्शन करेंगे तो हमारा दृष्टिकोण ही बदल जाएगा।

राजलक्ष्मी संविद गुरुकुलम् सैनिक स्कूल, नालागढ़ में हनुमान जयंती

हमें हनुमान जी की निष्ठा से प्रेरणा लेनी चाहिए

– दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

हनुमान जयंती के अवसर पर आज हमें हनुमान जी से प्रार्थना करनी चाहिए कि आप जैसी श्रीराम भक्ति हमारे हृदय में आए। हम आप जैसे निष्ठावान हो जाएँ। हम कर्म करने पर बदले में कुछ ना चाहें।

हनुमन्तलाल भगवती जानकी के अन्वेषण में गए तो रास्ते में सोने के पहाड़ ने उनको निमंत्रण दिया कि आओ मुझ पर विश्राम कर लो। तो उन्होंने क्या कहा? राम काज कीन्हें बिनु, मोहि कहाँ विश्राम। ऐसे ही हमारे हृदय में भी भावना प्रबल हो कि जब तक हम राष्ट्र और धर्म का कार्य ना कर लें, तब तक हमें विश्राम नहीं लेना है। फिर आगे चलकर उनको 'सुरसा' मिली। हनुमानजी जितने बड़े होते, सुरसा उतना ही अपना मुख बड़ा कर लेती। उसकी शर्त थी कि तुम्हें आगे जाना है तो मेरे मुख में प्रवेश करके बाहर निकलना होगा। हनुमान जी ने सोचा कि मैं इससे प्रतिस्पर्धा करने तो आया नहीं। मुझे तो राम जी का काम करना है। और बड़ी ही चतुराईपूर्वक वे नन्हा सा रूप लेकर सुरसा के मुख में प्रवेश करके बाहर निकल आए। सुरसा ने भी हनुमान जी को आशीर्वाद दिया। कि तुम बल के भी और बुद्धि के भी आगार हो। फिर आगे कौन मिला? लंकिनी मिली। जो पानी के भीतर रहती थी। वो पानी के जानवरों को नहीं छूती थी। जलचरों को नहीं खाती थी। नभ में उड़ने वाले जो पंछी होते थे। उनकी छाया जब सागर पर पड़ती थी, वो छाया पकड़ लेती थी और वो नभचर नीचे गिरकर उसका ग्रास बन जाते थे। ऐसे उसने हनुमान जी की गति को रोक दिया। हनुमान जी समझ गए। उसके चेहरे पर मुष्टि प्रहार किया और आगे बढ़ गए। याद रखना कि ऐसी ही एक लंकिनी हमारे भी पेट के पाताल में रहती है, जिसे 'ईर्ष्या' कहा जाता है। हमें भी अपनी इस लंकिनी को धराशायी करना चाहिए, अपने विवेक का मुष्टि प्रहार करके।

अपने नालागढ़ प्रवास में 'राजलक्ष्मी संविद गुरुकुलम् सैनिक स्कूल' के विद्यार्थियों के बीच हनुमान जयंती के अवसर पर पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने उक्त उद्‌गार प्रकट किये। आपने स्कूल की विभिन्न गतिविधियों का अवलोकन करते हुए परिसर में आयोजित यज्ञानुष्ठान में भाग लेते हुए पूजन-अर्चन किया। आपने नालागढ़ के एक रक्तदान शिविर का शुभारम्भ करते हुए इस लोकोपयोगी आयोजन की सराहना करते हुए इसे अनुकरणीय बताया।

अपनी सांस्कृतिक धरोहरों को अपने बच्चों को सौंपें

– दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

झारसुगुड़ा, संबलपुर (ओडिशा)

पद्म भूषण अलंकरण से सम्मानित आध्यात्मिक विभूति पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के झारसुगुड़ा आगमन पर नगरवासियों द्वारा उनका भव्य एवं भावभीना अभिवन्दन किया गया। स्थानीय सरबहाल रोड स्थित श्री राणीसती दादी मंदिर पर उनके स्वागत के लिये शहरवासियों में अपार श्रद्धा एवं उत्साह देखने को मिला। सर्वप्रथम उन्होंने श्री राणीसती दादी मंदिर पहुँचकर उनका दर्शन लाभ प्राप्त किया। तत्पश्चात् उपस्थित जनसमुदाय को अपने संबोधन में आपने वात्सल्य ग्राम में संचालित विभिन्न सेवा प्रकल्पों की चर्चा करते हुए ओड़िशावासियों से भी इस पुण्यकार्य में जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने युवाओं को भारत का भविष्य बताते हुये उन्हें अपने धर्म व राष्ट्र के साथ जुड़े रहने का मार्गदर्शन भी प्रदान किया। अभिभावकों को परामर्श प्रदान करते हुए उन्होंने कहा कि जैसे वे अपनी धरोहरों एवं संपत्तियों को अपने बच्चों को सौंपने का काम करते हैं, वैसे ही वे अपनी संस्कृति व धर्म की धरोहर को भी अपनी संतानों को सौंपने का कार्य करें।

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के स्वागत में आयोजित सभा का संचालन डॉ. डोली लाट द्वारा किया गया। इस अवसर पर संबलपुर के प्रसिद्ध डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल ने अपने उद्बोधन के द्वारा उपस्थित जनसमुदाय को दीदी माँ जी के जीवन परिचय से परिचित करवाया। इस अवसर पर श्री अशोक गांधी, श्री महेन्द्र केड़िया, श्री अमित अग्रवाल, श्री किशोर महांती, श्री बालगोविन्द मिश्रा, श्री ओमप्रकाश खेतान, श्री नवल अग्रवाल, श्री अशोक साकुनीया, श्री विनय साकुनीया, श्री नरेश मंगसपुरीया, श्री नरेश लोधा, श्री संजय लोधा, श्री राणीसती महिला मंडल की अनेक सदस्याएँ एवं विभिन्न सामाजिक व धार्मिक संगठन के सदस्यों ने अपनी सहभागिता से आयोजन को सुशोभित किया।

झारसुगुड़ा विमानतल पर पूज्या दीदी माँ जी की भावभीनी अगवानी

डॉ.पुरुषोत्तम अग्रवाल के संबलपुर निवास पर एक पारिवारिक आयोजन में

संबलपुर के प्रबुद्धजनों को संबोधित करते हुए पूज्या दीदी माँ जी

झारसुगुड़ा स्थित श्री राणीसती दादी मंदिर में दर्शन करते हुए

नौ गाँव, मनाली, हिमाचल प्रदेश में विराट हिन्दू सम्मेलन को संबोधित करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

हम सनातनी तो प्रकृति से भी रिश्ता जोड़ लेते हैं

– दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

आज हमारे सामने अनेकों चुनौतियाँ हैं, जिन्हें हम सब समझ रहे हैं। केवल मनुष्यों के साथ ही नहीं अपितु प्रकृति के साथ भी सामंजस्य बहुत आवश्यक है। मनुष्य धर्म निभाना बहुत आवश्यक है। सारी दुनिया जल रही है या तो भौतिकवाद की आग में या आतंकवाद की आग में। एक-दूसरे को नीचा दिखाने की लड़ाईयाँ हैं ये। कुछ देश चाहते हैं कि हमारी दुकान का माल ज्यादा बिके। इसके लिए पहले कुछ देश ध्वस्त किये जाएंगे और फिर उनका पुनर्निर्माण करने के लिए धन दिया जाएगा। बाजार में तो 'बाजारू व्यवहार' ही होता है परन्तु हम भारतवासियों ने दुनिया को कभी बाजार नहीं माना। हमने दुनिया को परिवार माना। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के साथ हम जिये। हमें रिश्ता बनाना आता है। जब हम छोटे थे, तब माँ से पूछा कि आसमान में ये कौन चमक रहा है? माँ ने कहा कि ये तेरा चंदा मामा है जो इस अंधेरी रात में तेरा मार्ग प्रशस्त करता है। तो केवल मनुष्यों से ही नहीं, दूर आसमान के नक्षत्रों से भी हमें रिश्ता बनाना आता है। धरती माँ है, नदी माँ है, गाय माँ है और भारत तो हमारी माँ है ही। रात्रि के समय वृक्षों और वनस्पतियों को कष्ट नहीं देना अथवा रविवार को तुलसी के पत्ते नहीं तोड़ना, ऐसी अनेक बातों की कितनी गहरी संवेदनशीलता के साथ हमारी माँ ने हमको बड़ा किया। मनुष्य निर्माण की यही प्रक्रिया है कि हम दूसरे के कष्ट को कष्ट समझें। एक समय था जब गुरुकुलों के बीच में व्यक्तित्वों के निर्माण होते थे।

एक गुरुकुल में शिष्यों की शिक्षा पूर्ण हुई। शिष्यों ने पूछा कि गुरुदेव क्या हम वापस जाएं अपने घरों को? गुरुदेव ने कहा कि हाँ, तुम्हारी शिक्षा पूर्ण हुई परन्तु अभी एक परीक्षा बाकी है। शिष्यों ने पूछा कि वो क्या परीक्षा है गुरुदेव बता दीजिए? गुरुदेव ने कहा कि वो परीक्षा हम लेंगे अपने ढंग से। एक-दो दिनों के बाद गुरुजी ने कहा कि तुम्हारी शिक्षा साधना पूर्ण हुई। अब लौट सकते हो अपने घरों को। गुरुकुल से लौटते समय घना वन, छोटी सी नदी और उसके ऊपर एक लकड़ी का पुल पार करके जाना होता था। शिष्यों ने देखा कि उस पुल के ऊपर काँटे ही काँटे बिछे हुए हैं। एक शिष्य तैरना जानता था तो वो तैर कर उस पार गया। दूसरे ने पुल पर चलते हुए काँटों से बच-बचकर पैर रखे और पार हो गया। जो तीसरा शिष्य था वो आगे बढ़ते हुए उस पुल के काँटों को बीनने लगा।

जो दो उस पार गए थे उन्होंने उससे कहा कि तुम पागल हो गए हो क्या? सांझ हो रही है, सूर्य अस्ताचल को जा रहे हैं। अभी जंगली व्याघ्र आदि जानवर आएंगे और तुम्हें खा लेंगे। वह शिष्य बोला कि रात्रि को कोई वन्य जीव इस पुल से निकला तो उसके पैरों में ये तीखे काँटे चुभ जाएंगे। मुझे उसका यह संभावित कष्ट स्वीकार नहीं है, इसलिए जब तक इस पुल के सारे काँटे नहीं बीन लेता, तब तक मैं उस पार नहीं जाऊंगा। इतने में गुरुदेव सामने आ गए। वो जो दो शिष्य उस पार चले गए थे, उनके कान पकडकर बोले कि गुरुकुल वापस चलो। अभी तुम सभ्य नागरिक नहीं बने हो। अभी तुम अपने नगर में जाने योग्य नहीं बने हो। और वो जो काँटे बीन रहा था, उसको कहा वत्स अपने गाँव लौट जाओ। जो दूसरों के मार्ग के काँटे बीनना सीख जाता है ना, वो किसी के मार्ग में कभी काँटे नहीं डालता।

हमारे यहाँ की परीक्षा इस तरह होती थी। भारत मनुष्य गढ़ता था। मनुष्य का अर्थ है – अधिकारों की लालसा नहीं, कर्तव्यों का बोध। भारत चरित्र को सर्वोपरि मानता था भारत एक एक व्यक्ति के जीवन चरित्र को अगर देखोगे तो एक-एक व्यक्ति, एक-एक विधा का प्रमाण स्वयं से देता दिखाई देगा। कर्ण को याद करो आपको लगेगा कि कितने अद्भुत दानवीर थे वो! राजा हरिश्चंद्र का स्मरण करोगे तो लगेगा कि कर्तव्यनिष्ठा क्या होती है! अपना सर्वस्व लुटा कर भी अपने वचन को निभाने वाले पूर्वजों की संतान हैं हम। हम सबका सौभाग्य है कि आज हिमाचल की इस पावन भूमि पर आयोजित विराट हिन्दू सम्मेलन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय प्रचारक प्रमुख माननीय श्री वनवीर जी के तेजस्वी नेतृत्व में हम सब बैठकर राष्ट्र एवं धर्म की चर्चा कर रहे हैं। आइये, हम सब संकल्पित हों भारत के नवनिर्माण के लिए।

स्वामी परमानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय, दिल्ली में

विशेष अनुष्ठान एवं भंडारा सम्पन्न

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन सानिध्य में पश्चिमी विनोद नगर, मंडावली स्थित 'स्वामी परमानंद प्राकृतिक चिकित्सालय, योग एवं अनुसंधान केन्द्र' में विशेष यज्ञानुष्ठान एवं पूजन-अर्चन में सपरिवार भाग लेते हुए श्री आई.सी.अग्रवाल, श्री सुभाष जग्गा, श्री सत्येन्द्र सिंह, श्री सुभाष गोयल एवं अन्य गणमान्यजन। इस अवसर पर भंडारा प्रसादी का आयोजन भी किया गया।

वात्सल्य सेवा समिति, फरीदाबाद
वर्ष 2026-29 की कार्यकारिणी घोषित

फरीदाबाद, हरियाणा.

विगत दिनों वात्सल्य सेवा समिति, फरीदाबाद की वर्ष 2026-2029 हेतु नई कार्यकारिणी की घोषणा परमशक्ति पीठ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री जयभगवान अग्रवाल द्वारा की गई। इस अवसर पर फरीदाबाद के सेक्टर 28 स्थित वात्सल्य समिति कार्यालय पर संस्था की विशेष बैठक आयोजित हुई।

कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री बी.आर.सिंगला द्वारा वर्ष 2015 से संचालित 'वात्सल्य सेवा समिति' की उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया। उन्होंने वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन स्थित कामधेनु गौगृह गौशाला के बारे में आवश्यक जानकारी साझा करते हुए सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों से गौशाला के वार्षिक व्यय की व्यवस्था की जिम्मेदारी प्रामाणिकता के साथ निभाने और अधिक सक्रियता से जुटने का आह्वान किया।

इस अवसर पर श्री जयभगवान अग्रवाल कहा कि -अपनी-अपनी व्यस्तताओं के बावजूद बैठक में इतनी बड़ी संख्या में गणमान्यजनों की उपस्थिति समिति के प्रति उनकी लगन, निरंतर सक्रियता और कर्मठता का जीवंत प्रमाण है। फरीदाबाद वात्सल्य समिति हर पैमाने पर खरी उतरने वाली और हर दृष्टि से देश में नंबर एक समिति है।' इसके बाद उन्होंने पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी से अनुमोदित वात्सल्य सेवा समिति, फरीदाबाद के नवनियुक्त सदस्यों के दायित्व अनुसार नामों की घोषणा करते हुए उन्हें शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

सभी गणमान्यजनों ने समिति के कार्यालय की सज्जा, स्वच्छता एवं उपलब्ध सुविधाओं का अवलोकन कर कहा कि यह सेवा केंद्र संगठन कार्य के विस्तार में गुणात्मक वृद्धि तथा उद्देश्य पूर्ति में बेहतरीन साधन सिद्ध होगा। श्री बी.आर.सिंगला ने बताया कि वे स्वयं और कार्यालय सचिव श्री राजेश नेवटिया प्रतिदिन प्रातः 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक एवं सायं 5 बजे से 7 बजे तक वात्सल्य सेवा समिति के इस कार्यालय में उपलब्ध रहकर अपनी सेवाएँ प्रदान करेंगे।

कार्यक्रम के समापन में संस्था संरक्षक एवं कॉर्पोरेट ट्रस्टी श्री प्रेम पसरीचा ने आह्वान किया कि पूज्या दीदी माँ जी के समाज, राष्ट्र और मानवता को समर्पित प्रकल्पों में जुड़ने को हम अपना सौभाग्य समझकर तन-मन-धन से सहयोग देने में अग्रणी रहें। श्री सुरेन्द्र बंसल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

वात्सल्य सेवा समिति, फरीदाबाद के नवनियुक्त पदाधिकारीगण

संरक्षक : श्री प्रेम पसरीचा
श्री शिवशरण गोयल
श्री सुरेश गर्ग

अध्यक्ष : श्री सुरेन्द्र बंसल

महासचिव : श्री बी.आर.सिंगला

उपाध्यक्ष : श्रीमती सुनीता बंसल
श्री टी.पी.माहेश्वरी
श्री विनेश अग्रवाल
श्री तेजपाल सिंह

सचिव : श्री विनय पाराशर

कार्यालय सचिव : श्री राजेश कुमार नेवटिया

सदस्यगण :

श्री दिनेश बरेजा, श्री डी.के.माहेश्वरी, श्री वेदप्रकाश रावत, श्री मनोज कपिला, श्री विनोद गर्ग, श्री दीपचंद गुप्ता, श्री पवन गोयल, श्री सुशील शर्मा, श्री ए.पी.गुप्ता, श्री महेश पाल, श्री राकेश दीक्षित, श्री अंकित सिंगला, श्री विशाल, श्रीमती अनिता सोलंकी, श्रीमती ममता पाराशर, श्रीमती मंजू दीक्षित, श्रीमती परवीन कपिला एवं श्रीमती सोनिया रावत।

वात्सल्य सेवा समिति, फरीदाबाद कार्यकारिणी का समूह चित्र

सनातन धर्म एवं परमशक्ति पीठ सेवा प्रकल्पों के प्रचारार्थ साध्वी सुहृदय गिरि जी का यू.के. प्रवास सम्पन्न

वेम्बले, यू.के. स्थित सभागार में 'श्री हनुमन्त कथा' के माध्यम से हनुमन्तलाल के गुणानुवाद करते हुए साध्वी सुहृदय गिरि जी

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की शिष्या साध्वी सुहृदय गिरि जी का परमशक्ति पीठ ऑफ यू.के. द्वारा आयोजित ब्रिटेन प्रवास विगत माह सम्पन्न हुआ। भर में हिन्दू समुदाय को पूज्या साध्वी सुहृदय गिरि जी के आध्यात्मिक सानिध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर उन्होंने श्री हनुमन्त कथा के माध्यम से सनातन धर्म के शाश्वत ज्ञान को ब्रिटिश धरती पर पहुँचाने का प्रयत्न किया। पूज्य युगपुरुष महामंडलेश्वर अनन्तश्री विभूषित स्वामी परमानंद गिरि जी महाराज और पूज्य दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन आशीर्वाद एवं प्रेरणा से संचालित परमशक्ति पीठ के विभिन्न सेवा प्रकल्पों तथा वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में निर्माणाधीन सांस्कृतिक महातीर्थ श्री सर्वमंगला पीठम् के उद्देश्यों को भी ब्रिटेनवासियों के समक्ष विस्तारपूर्वक रखा।

परमशक्ति पीठ ऑफ यू.के. की सहयोगी डॉ.हर्षा जानी ने जानकारी देते हुए बताया कि साध्वीजी ने स्विंडन मंदिर, राम मंदिर साउथॅल, श्रीजी धाम हवेली, श्रीराम मंदिर, लेस्टर, ब्रोमली मंदिर कम्युनिटी एसोसियेशन, लक्ष्मीनारायण मंदिर, हाउंस्लो और श्री सनातन मंदिर, वेम्बले में श्री हनुमान जी की जन्म से लेकर श्रीराम के परम सेवक के रूप में उनकी भूमिका तक की कथा सुनाते हुए उनके भक्ति, सामर्थ्य और निःस्वार्थ सेवा जैसे गुणों का 'श्री हनुमन्त कथा' के माध्यम से प्रस्तुतिकरण किया। सभी स्थानों पर श्रोताओं ने भावविभोर होकर उन्हें सुनते हुए परमशक्ति पीठ को सहयोग देने का संकल्प लिया।

साध्वीजी के यूके प्रवास के प्रमुख अनुभवों में करुणा मनोर वृद्धाश्रम और एक पशु चिकित्सालय का दौरा था, जहाँ पूज्य साध्वी जी ने कर्मचारियों को उनकी सेवा के लिए धन्यवाद दिया। एक यहूदी सीनेगोग में पूज्य साध्वी जी ने यहूदी और हिन्दू समुदायों के साझा जीवन मूल्यों पर चर्चा की।

नागरेचा रेडियो और अपना टी.वी. पर इन्टरव्यू के दौरान पूज्य साध्वी जी ने श्रोताओं को वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन स्थित भारत के पहले गर्ल्स सैनिक स्कूल 'संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल' और परमशक्ति पीठ के अन्य प्रकल्पों के बारे में भी विस्तार से चर्चा की।

अपने आध्यात्मिक प्रवचनों के माध्यम से साध्वी जी ने बताया कि कैसे अटूट एकाग्रता, अनुकूलनशीलता और साहस के द्वारा जीवन की अनेक बाधाओं को दूर किया जा सकता है। उन्होंने हनुमान जी की कथा और आधुनिक जीवन के लिए व्यावहारिक आध्यात्मिकता को एक साथ पिरोया।

इस आयोजन की विभिन्न व्यवस्थाओं में श्री रजनीकांत जानी, डॉ.हर्षा जानी, श्री अनिल भाई, श्रीमती शुभप्रभा बेन, नागरेचा परिवार, श्री शशि भाई वेकारिया, श्री सुरेश भाई बाबरिया, प्रदीप भाई, श्री सूर्यकांत भाई वर्सानी, श्री प्रकाश भाई काछड़िया, श्री महेंद्र भाई नाथवाणी, श्री अरुण भाई जागानी, श्री कांजी भाई और श्री राजेश भाई का विशेष योगदान रहा।

वेम्बले में आयोजित 'श्री हनुमन्त कथा' व्यासपीठ एवं साध्वी सुहृदय गिरि जी का पूजन-वंदन करते हुए श्री रजनीकांत जानी, श्री प्रणव पटेल, श्री रमणीक भाई पटेल, श्रीमती पारुल बेन पटेल, श्रीमती विद्याबेन दवे एवं डॉ.हर्षा बेन जानी।

श्रीमती पारुल बेन पटेल, डॉ.हर्षा जानी, श्री शशि भाई पटेल, एवं श्रीमती विजया बेन पटेल।

'करुणा मेनोर केयर होम' वृद्धाश्रम में

श्री अनिल भाई एवं श्रीमती शुभप्रभा बेन

श्री हरमित व्यास, श्री चेतन हरपाले, श्रीमती विजया बेन दवे, श्रीमती पारुल बेन पटेल एवं श्री प्रणव भाई पटेल

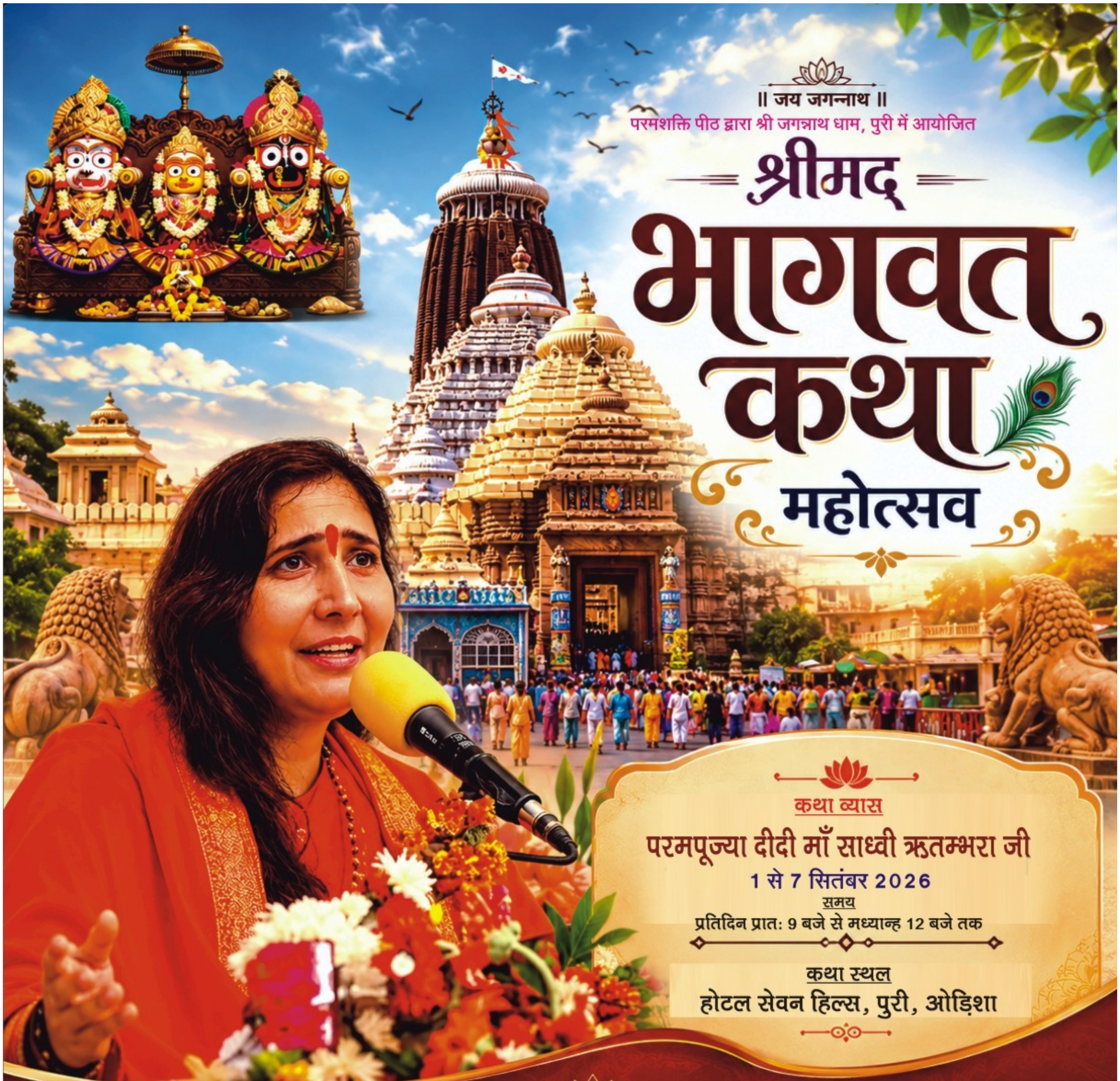

कथा व्यास

परमपूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

1 से 7 सितंबर 2026

समय

प्रतिदिन प्रातः 9 बजे से मध्याह्न 12 बजे तक

कथा स्थल

होटल सेवन हिल्स, पुरी, ओड़िशा

रजिस्ट्रेशन शुल्क - प्रति व्यक्ति 41000.00 रुपये
डबल बेड कक्ष में एक अतिरिक्त बेड लेने पर शुल्क 35000.00 रुपये
डबल बेड कक्ष में दो अतिरिक्त बेड लेने पर शुल्क 30000.00 रुपये
कुल सदस्य संख्या - 400

*.PARAM SHAKTI PEETH
Scan and Pay
UPI ID : PARAMSHAKTIPEETH.eazypay@icici

ACCOUNT DETAILS
Account Name : Param Shakti Peeth
Account No. : 033001001453
IFSC Code : ICIC0000330
Branch : Anand Vihar, Delhi

रजिस्ट्रेशन शुल्क जमा करने के पश्चात पुष्टि हेतु 99585 80130, 8826888003 पर फोन कॉल अथवा व्हाट्स एप से सम्पर्क करें। आप ईमेल info@vatsalyagram.org द्वारा सूचना दे सकते हैं

सम्पर्क– 82620 84090, 99585 80130
011 22238751, 99999 71714, 94122 77289

उपलब्ध सुविधाएँ :

- इस शुल्क में सात दिनों तक होटल सेवन हिल्स में आपका निवास और भोजन व्यवस्था सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त इसी शुल्क में प्रतिदिन श्रद्धालुगणों को स्थानीय मंदिरों एवं दर्शनीय स्थलों के भ्रमण की व्यवस्था भी रहेगी।
- होटल के एक कक्ष में दो श्रद्धालु रहेंगे।
- अपने गृह नगर से जगन्नाथ पुरी तक पहुँचने का यात्रा व्यय श्रद्धालुगण स्वयं वहन करेंगे।
- 31 अगस्त 2026 को जगन्नाथ पुरी के निकटतम भुवनेश्वर एयरपोर्ट से कथा स्थल तक पहुँचने और कथा समापन के पश्चात् 8 सितम्बर 2026 को पुनः एयरपोर्ट तक पहुँचने हेतु वाहनों की व्यवस्था श्रद्धालुगणों की पूर्व सूचना पर परमशक्ति पीठ की ओर से उपलब्ध रहेगी।
- यदि आपको विमान यात्रा टिकिट बुकिंग करने में कोई कठिनाई हो तो इसके लिए आप श्री अजय अग्रवाल से मोबाइल नंबर 95553 50061 पर संपर्क कर सकते हैं।

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के आगामी कार्यक्रम

गुजरात प्रवास
वात्सल्य ग्राम, ग्राम-महीषा,
डाकोर जी,
10 से 14 जून 2026

उत्तराखण्ड प्रवास
वात्सल्य गंगा आश्रय, हरिद्वार
18 से 22 जून 2026

निष्ठा दिवस
वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन
24 जून 2026

वात्सल्य परिवार के दो विवाह समारोह
वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन
25 से 30 जून 2026

दिल्ली स्थित यमुना स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स, सूरजमल विहार में कन्हैया गौशाला ट्रस्ट, लोनी द्वारा आयोजित '251 गौसंरक्षक सह गौ नामकरण सनातन समारोह' को संबोधित करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी।

टेलीविज़न पर

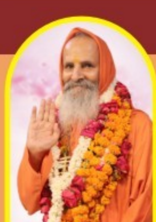

परम पूज्य सद्गुरुदेव युगपुरुष
स्वामी परमानन्द जी महाराज की
परम वाणी

दिशा TV
प्रतिदिन
रात्रि 9:30 बजे

Vedic
सोमवार, बुधवार एवं
गुरुवार प्रातः 9:30 बजे

परम पूज्य वात्सल्यमूर्ति
दीदी माँ साध्वी ऋतम्भराजी की
वात्सल्य वाणी

संस्कार THE CHANNEL OF INDIA हमारी संस्कृति हमारी विरासत
प्रतिदिन
सायं 7:20 बजे

आस्था
प्रतिदिन
प्रातः 8:00 बजे

सत्संग
प्रतिदिन
रात्रि 10:00 बजे

Postal Regd. No. DL(E)20/5231/2025-27
DELMUL/2006/16716
Postal Date : 9th & 10th of Every month

An ISO 9001: 2000 Certified School

Samvid Gurukulam Girls Sainik SCHOOL

CBSE affiliated (# 2131180)
Co-Education up to Class Vth; Residential and Day School for Girls
Play Group - Grade XII (Science, Commerce, Humanities)

TECHNOLOGY ENABLED SCHOOL
Powered By : Extramarks

Approved as *Girls Sainik School* by 'Sainik School Society' Ministry of Defense

We bring out the 'winner in your child'

- State of the art infrastructure
- Low teacher student ratio
- Total Personality Development
- Wi-Fi Campus
- Counseling Cell
- Center of performing arts
- Safe guarding Indian culture as part of world heritage
- Science, Computer & Mathematics Lab
- Regular Excursions
- Centrally Air cooled Hostel for girls.
- SANSKARAM CLASSES: Learning life skills through Value Education
- NANHI DUNIYA: Introduction of children to nature
- SPORTS ACADEMY: Horse Riding, Skating Football, Hockey, Basket Ball, Lawn Tennis,Table Tennis, Judo-Karate, 400M Track
- MUSIC: Vocal & Instrumental
- DANCE: Bharatnatyam, Kathak, Contemporary
- Transport facility available

Vatsalya Gram, Mathura - Vrindavan Marg, P.O. - Prem Nagar,
Vrindavan - 281003 (U.P.) Mobile No. 94127 77152 & 94127 77154
Website : www.samvidgurukulam.org
Like us at : www.facebook.com / samvid4u
email : principal@samvidgurukulam.org